ISSN 2455-0310

2.3

VOLUME 2, ISSUE 3

A Bilungual, Bimonthly e-Magazine of Translation And Cinema

TRANSFRAME

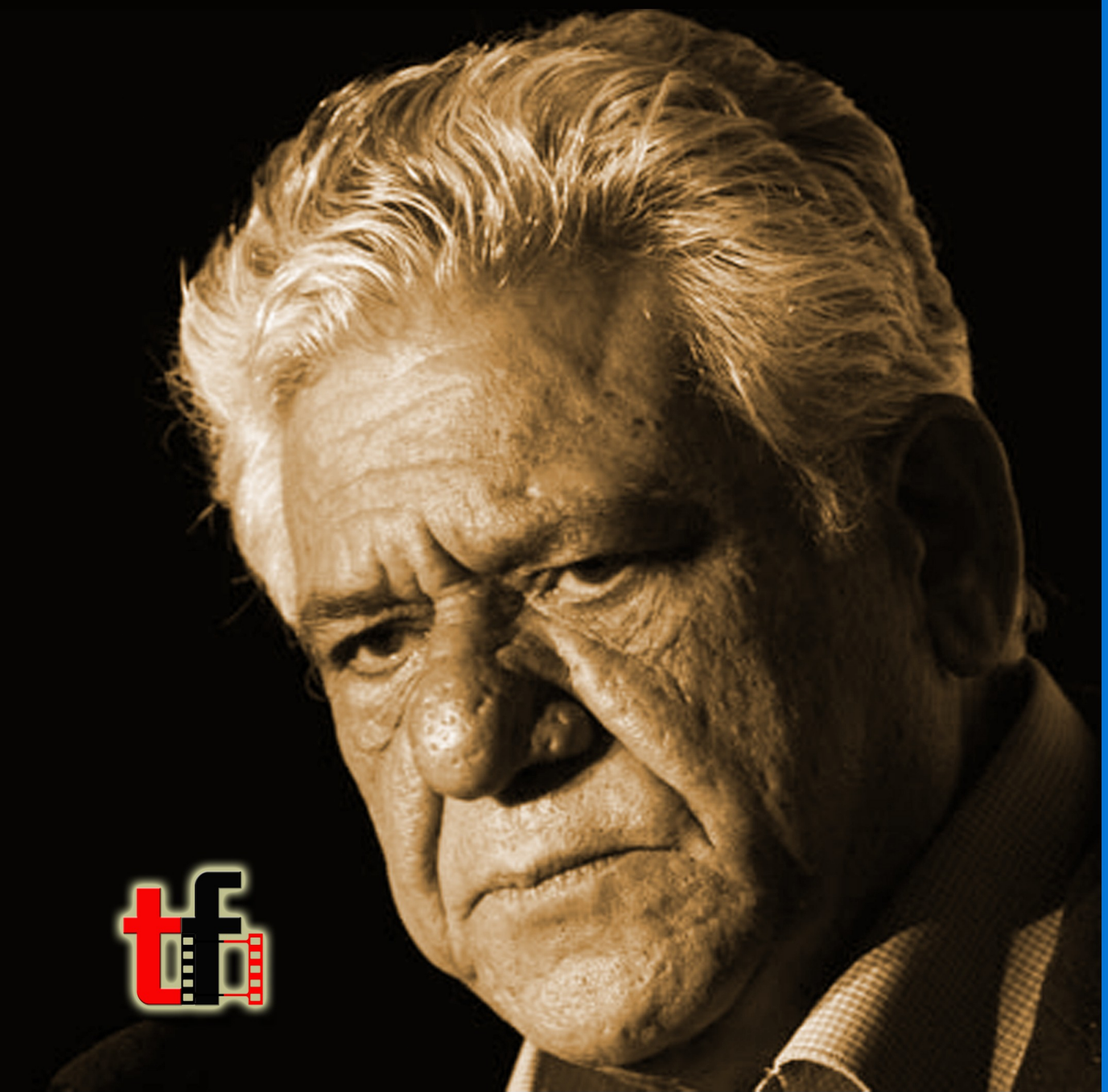

JANUARY-FEBRUARY 2017

TRANSFRAME

VOLUME 2, ISSUE 3

2017

E– MAGAZINE OF TRANSLATION & CINEMA

CLICK ON ARTICLES TO READ

STUDY

4 विज्ञान: ज्ञान, साहित्य और अनुवाद (II) -डॉ. जगदीश शर्मा

8 'अतीत के चलचित्र' में महादेवी वर्मा- डॉ. मानवेश नाथ दास

11 फ़िल्म एडिटिंग और अल्फ्रेड हिचकॉक- प्रवीण सिंह

PERSONALITY

13 Alexander Graham Bell : Educator, Scientist, Inventor, Linguist (1847–1922)

CRITICAL EVALUATION

16 Dangal

19-26 Dear Zindagi, Rock On 2, Tum Bin 2 & Befikre

RESEARCH

29 देशज भाषाई लेखन और पत्रकारिता : चुनौतियों के बीच संभावनाएं (विशेष संदर्भ: झारखंड)- अनुपमा कुमारी

33 ROLE OF BUDDHIST BHIKKHUS IN SOCIETY- Sandip T. Kamble

39 MERGERS AND ACQUISITIONS REGULATORY FRAMEWORK IN INDIA– Rakesh Kumar

64 लोहिया की भाषा विकास की अवधारणा- भारती देवी

CREATION

46-48 लेखनी : Megha Acharya तुलिका : Merlin कैमरा :Abhimanyu Singh

INTERVIEW

49 An Interview with Mr Nicolas Boin Pincipato – Latika Chawada

TRANSLATION

53 मराठी के सुप्रसिद्ध कवि मंगेश पाड़गावकर की कविता का अनुवाद-शिल्पा

LANGUAGE

54 An Introduction To Spanish Grammar- TF

56 हिंदी में अव्यय शब्दों के अर्थ प्रयोग की स्थिति - सत्येन्द्र कुमार

61 हिंदी का अतीत और वर्तमान - डॉ. चरणजीत सिंह सचदेव

PRACTICE

58 Camera Tips for Enhanced Digital Photos -TF

संपादकीय

....अपनी बात

वर्ष 2017 में आप सबका स्वागत और शुभकामनाएं!
नव वर्ष के उत्साह और उल्लास के वातावरण में बहुत ही दुखद प्रसंग का सामना हमें करना पड़ा। प्रख्यात सिने अभिनेता और रंगकर्मी ओम पुरी जी आज हमारे बीच नहीं हैं, यह भारतीय रंगमंच और सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। पर्दे पर हर रंग को उतारते हुए ओमपुरी जी ने गंभीर से लेकर कॉमेडी भूमिकाओं में भी अपना लोहा मनवाया। उन्होंने अपने करियर में 300 से ज्यादा फ़िल्मों में काम किया। वे पद्मश्री पुरस्कार से भी नवाज़े जा चुके हैं। ऐसे महान कलाकार को ट्रांसफ्रेम टीम की ओर से भावपूर्ण नमन एवं श्रद्धांजली।

ट्रांसफ्रेम का यह अंक ओम पुरी जी को समर्पित.

-संपादक

TRANSFRAME
E– MAGAZINE OF TRANSLATION & CINEMA

PUBLISHER
Praveen Singh Chauhan
Peace Aprt., Versova
Andheri (w) Mumbai 400061
T +91 9763706428

EDITOR
Megha Acharya
Praveen Singh Chauhan

LAYOUT- COVER DESIGN
Praveen - Megha

TRANSFRAME TEAM
Latika Chawada
Prakash Upreti
Sandeep Chaure
Avinash k. Rohit

©All Rights Reserved

The publisher regret that they can not accept liability for error or ommisions contained in this publication, however caused. The opinions and views contained in this publication are not necessarily those of the publishers or editors. No part of this publication or any part of the contents there of may be reproduced or transmitted in any form without the permission of publishers in writing. An exemtion is hereby granted for extracts used for the purpose of fair review.

GO DIGITAL, GO PAPERLESS, SAVE TREES, SAVE WATER

विज्ञान: ज्ञान, साहित्य और अनुवाद

अध्ययन

पिछले अंक में आपने आलेख 'विज्ञान: ज्ञान, साहित्य और अनुवाद' का पहला भाग पढ़ा था. इस अंक में आपके समक्ष प्रस्तुत है- आलेख का दूसरा और अंतिम भाग.

डॉ. जगदीश शर्मा

Associate Professor

School of Translation Studies and Training (SOTST)
Indira Gandhi National Open University (IGNOU)
Ph.+91 9654177491, 011 29571625

(.....शेष भाग)

भावानुवाद, सारानुवाद की अपेक्षा पूर्ण अनुवाद -

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में मूल पाठ का स्वेच्छा से संक्षेपण अथवा उसका अति पल्लवन उचित नहीं है और है छोड़ने अथवा जोड़ने की गुंजाईश है. विज्ञान संबंधी साहित्य की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न होती है. उदाहरण के लिए फोकस – focus का सामान्य अर्थ केंद्र अथवा ध्यान में रखना होगा, परंतु गणित में इसका अर्थ नाभि अथवा भूकंप आदि के संदर्भ में इसका अर्थ 'भूकंप केंद्र' के रूप में होगा ((चमोला: 2014: 264). रसायन शास्त्र में किसी शब्द का अर्थ जीव विज्ञान अथवा भौतिकी या खगोल विज्ञान से भिन्न हो सकता है, अतः अनुवादक को संबंधित ज्ञान शाखा के अनुसार ही शब्द विशेष का पारिभाषिक पर्याय तलाशना होगा. वैज्ञानिक अनुवाद पूर्ण अनुवाद की श्रेणी का अनुवाद होता है तथा साहित्यिक विधा के अनुवाद से सर्वथा भिन्न. इसी कारण से इसे कई बार शाब्दिक अनुवाद का दंश भी झेलना पड़ता है. भाषा बोझिल और अटपटी हो जाती है. तथ्यात्मक प्रामाणिकता की रक्षा के लिए वैज्ञानिक अनुवाद में भावानुवाद या सारानुवाद के लिए संभावना बिलकुल नहीं है. गूढ़ संकल्पनाओं को जन साधारण तक पहुँचाने के लिए यदि थोड़ी बहुत छूट हो भी तो वह केवल शैली और कथन तक सीमित होगी न कि स्वछंद या मुक्त भाषांतरण के लिए (सक्सेना, 1993: 224-262).

लिप्यंतरण – विज्ञान संबंधी शब्द अनेक अवसरों पर अनुदित किए जाने से जटिल अभिव्यक्ति के रूप में परिणत हो जाते हैं, तथा अपने मूल अर्थ या सहज अर्थ से विचलन करते प्रतीत होते हैं, हालाँकि वे पारिभाषिक दृष्टि शुद्ध होते हैं. ऐसी स्थिति में इनका लिप्यंतरण आवश्यक हो जाता है. गणित के अंक, संकेत चिह्न तथा रासायनिक सूत्रों की तो मूल भाषा यथावत रख लिया जाता है. Septic tank को पारिभाषिक दृष्टि से पूतिक खाना लिखना अशुद्ध नहीं होगा, परंतु इसका सर्व सामान्य और सुलभ प्रयोग सेप्टिक टैंक ही है. इसी प्रकार आक्सीजन, हाइड्रोजन, हीलियम गैसों को भी लिप्यंतरित कर लिखा लिया जाता है. इस प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद करना संभव नहीं है. कैटफ़र्ड ने भी अनुवाद की कुछ सीमाओं का जिक्र किया है इनमें पारिभाषिक शब्द भी शामिल हैं जो विज्ञान लेखन का मूल आधार हैं. आविष्कारकर्ताओं के नाम पर भी विज्ञान की अनेक प्रयुक्तियां आधारित हैं, जैसे- करंट, बैल, पाश्चरीकरण, वोल्ट, हर्ट्ज़, सेल्सिस आदि. इनके केवल लक्ष्य भाषा लिपि में लिप्यंतरण की ही आवश्यकता है. स्वास्थ्य विज्ञान में भी इस प्रकार की शब्दावली पर्याप्त संख्या में है जो इसके शोधकर्ताओं के नाम पर आधारित है. अनुवाद में गति से भारतीय भाषाओं में अनेक विदेशी संकल्पना शब्द रच-बस गए हैं और उनका प्रयोग भी हो रहा है अतः इनका लिप्यंतरण ही सुगम और अभीष्ट होगा (नौटियाल, 2006: 110).

विषय-विधा एवं भाषा का ज्ञान बनाम सहयोगपरक अनुवाद - अक्सर यह प्रश्न अनुवादकों और अनुवाद प्रायोजकों के समक्ष द्विविधा उत्पन्न करता है कि अनुवाद एक सह्योगपरक गतिविधि है अथवा एकल. साहित्यिक विषयों में जहाँ किसी किसी शब्द के दर्जनों अर्थ संभावित हो सकते हैं वहां बहुत से अनुवादकों का एकमत होना मुश्किल होगा, क्योंकि सभी के अपने अपने तर्क हो सकते हैं तथा संदर्भ भी भिन्न हो सकते हैं, परंतु वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग निहित है तथा संकल्पनाओं के सार्वभौम अर्थ हैं. परंतु फिर भी वैज्ञानिक साहित्य में विषय विविधता की विशालता के अनुरूप यह संस्तुति की जाती है कि भाषा की जानकारी और शैली एवं अभिव्यक्ति भी उतनी ही आवश्यक है जितनी विषय विशेष की सघन जानकारी. इसलिए वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में भाषाविद तथा विज्ञान विशेषज्ञ दोनों की ही भूमिका को अहम माना गया है. विशेषज्ञ मूल संकल्पना को स्पष्टता देगा, जबकि भाषाविद भाषा में विषय के अनुरूप निखार हेतु समतुल्य पर्याय तलाशने में सहायक होगा. अतः विज्ञान साहित्य के अनुवाद में सहयोगपरक अनुवाद को उत्तम माना गया है.

स्थानीय अभिव्यक्तियाँ और परिवेश अंतरण - विज्ञान सार्वभौम होने के साथ सामान्य जन जीवन का अभिन्न अंग भी है. जीवन की प्रत्येक गतिविधि में विज्ञान के किसी-न-किसी पहलू का समावेश रहता है. मनुष्य, पशु पक्षी, कीट पतंगे, पेड़ पौधे, चेतन अवचेतन जीवन में विज्ञान के नियम और अनुशासन कार्यभूत होते परिलक्षित होते हैं. जड़ चेतन जीवन में पेड़ पौधों के जीवन के पक्ष हों या पक्षियों के उड़ने तथा व्यवहार की शैलियाँ हों, या फिर अचेतन पदार्थों में होने वाले बदलाव विकास, सभी में विज्ञान प्रक्रियाओं और नियमों का प्रभाव दिखाई देता है. मनुष्य जीवन तो आज समग्रतः विज्ञान के आविष्कारों पर निर्भर है, खानपान, संप्रेषण, आवागमन, कार्य प्रणालियाँ और उसके स्वास्थ्य की देखभाल सभी कुछ विज्ञान और वैज्ञानिक परिणामों से साधित यंत्रों एवं प्रौद्योगिकियों पर आधारित है. इससे सार्वभौम विज्ञान का वैयक्तिकरण एवं स्थानीयकरण प्रतीत होता है. भारत एक बहु-भाषिक एवं बहु-सांस्कृतिक देश है और प्राचीन काल से हमारा लोक साहित्य स्थानीय शब्द भंडार से संपन्न रहा है. स्थानीय स्तर पर हमारे पास अपने जीवन और पर्यास को व्यक्त करने के लिए शब्दावलियाँ अभिव्यक्तियाँ हैं. इन्हें हम पूर्णतः अपने प्रयोग से विलग नहीं कर सकते और न ही यह संभव होगा. अनुवादकों के लिए सार्वभौम एवं स्थानीय के मध्य सामंजस्य बनाना एक चुनौती है. स्थानीय स्तर पर प्रत्येक तत्त्व एवं पदार्थ के लिए नाम, उनकी क्रियायों, अभिक्रियाओं और अनुक्रियायों के लिए प्रचलित शब्द, माप तोल, दूरी, पैमाने, मनुष्य एवं उसके परिवेश के प्राणियों की शारीरिक बनावट और अंगों के नाम, स्थानीय यांत्रिकी, जलवायु एवं पारिस्थिकी संबंधी अभिव्यक्तियाँ जैसे अनंत जीवन क्षेत्र हैं, जिनके लिए हर समाज और समुदाय की अपनी पारिभाषिक शब्दावली है. ऐसी स्थिति में विज्ञान शब्दावली की एकरूपता एवं मानकता का प्रश्न उत्पन्न होता है. अनुवादकों को जहाँ विज्ञान को वास्तविक जीवन के अनुभवों और प्रयोगों से जोड़ने की चुनौती है वहीं मूल सूचना एवं अकथ्य को अक्षुण रखने का दायित्व भी है. नाइडा विज्ञान संबंधी साहित्य के अनुवाद को आधुनिक सांस्कृतिक विकास में अधिक मुश्किल नहीं मानते हैं, परंतु उनका यह भी मत है कि भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत पश्चिमी विज्ञान साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद अत्यधिक दुष्कर है. यह एशियाई देशों में विज्ञान संबंधी अनुवाद के लिए एक बड़ी चुनौती है. (नाइडा, 194:223).

वैज्ञानिक अनुवाद के संदर्भ में मेटा पत्रिका में छपे सुंदर सरुक्की (2001:646-663) के लंबे लेख में मौलिकता के प्रश्न पर सुदीर्घ चर्चा की गई हैं, जिसमें वाल्टर बेंजामिन, नाइडा, वेनुटी तथा अनेक दूसरे अनुवाद विचारकों के दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं. इनमें बेंजामिन के लेख 'the task of translator' में लक्ष्य भाषा में लक्षित प्रभाव सृजित होने की बात की गई है, जिसके माध्यम से मूल कथ्य, लक्ष्य पाठ में 'echo' (प्रतिध्वनि) करता है. वैज्ञानिक साहित्य के लक्ष्य पाठ में मूल की प्रतिध्वनि (सार का सबल अहसास) का होना ही अनुवादक की सफलता है. उनके अनुसार विज्ञान और अनुवाद के मध्य मौलिकता का संकल्प ही प्रथम संबंध होता है. विज्ञान में जगत मौलिक ही प्रतिभाषित होता है और इसे मौलिक ही व्यक्त करने की चुनौती अनुवाद में भी होती है. जगत की व्याख्या करते समय उसकी एकाधिक व्याख्याएं होना स्वाभाविक है और अनेक पाठ निर्मित होना निरपवाद नहीं है. इसलिए अनुवादक को विज्ञान संबंधी साहित्य में 'क्या कहना अभिप्रेत है' यह जान लेना आवश्यक

है. भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद पर सुप्रसिद्ध शिक्षाविद कुलन्दैस्वामी की संस्तुतियां महत्वपूर्ण है, जिनमें भाषा में कंप्यूटर संबंधी 'हायर लैंग्वेज' जैसे मुद्दों के समाधान पर बल दिया गया है.

संदर्भ साहित्य का अभाव - अधिकांश भाषाविदों एवं अनुवादकों का मत है की अभी भी भारतीय भाषाओं के साहित्य में विज्ञान एवं विज्ञान प्रयोजन क्षेत्रों की शब्दावली का वैज्ञानिक सृजन नहीं हुआ है. इसका मुख्य कारण भारतीय भाषाओं में मूल विज्ञान लेखन का अभाव है. विज्ञान लेखन के तौर तरीकों पर वैज्ञानिक रीति से विचार और कार्यान्वयन अभी भी होना शेष है. जो कुछ वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध है उसमें अधिकतर अनूदित है और यदि कुछ मूल साहित्य है तो उसकी गुणवत्ता एवं लेखन प्राविधि पर प्रश्नचिह्न लगता रहा है. परिणामस्वरूप अनुवादकों को क्लिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का आश्रय लेना पड़ता है, जिससे स्थानीय भाषाओं में उनका समावेश कठिन हो जाता है. आधुनिक विज्ञान में अधिकांश संकल्पनाए पश्चिमी देशों से उपजी होने के कारण उनके समानार्थी हमारी भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं. कंप्यूटर, प्रबंध, जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य विज्ञान और विकास संबंधी अनेक दूसरे क्षेत्रों की शब्दावलियाँ अभी भी भारतीय परिवेश में अपने लिए सकारात्मक शब्द संपदा नहीं जुटा पाई हैं. उपलब्ध कोशीय संसाधन अभी भी पूर्ण रूप से स्वाभाविक पर्याय एवं स्थानीय प्रयोग हेतु स्वीकार्य पारिभाषिक शब्द अपेक्षित मात्रा तथा स्तर में नहीं बना पाए हैं. अनुवादकों के लिए यूं तो किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण की सुव्यवस्था की जानी बाकी है, विज्ञान साहित्य के अनुवादकों के लिए तो यह स्थिति और भी निराशाजनक है. विज्ञान साहित्य के प्रति, रूचि, उसकी जानकारी, तथा इसके प्रति समर्पण के साथ-साथ गतिशील विज्ञान प्रवृत्तियों से अनुवादकों को परिचित रखना अपरिहार्य है. देश में जिस मात्रा में वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद अपेक्षित है उसके लिए संदर्भ साहित्य एवं सुविकसित अनुवाद प्रशिक्षण की तत्काल आवश्यकता है.

लंदन इंस्टिट्यूट ऑफ लिंग्विस्टिक्स के अनुसार विज्ञान साहित्य के अनुवादकों में अपेक्षित छह योग्यताओं की चर्चा इस प्रकार की है: (हसनवी: ट्रांसलेशन डायरेक्टरी.कॉम)

- अनूद्य विषय की व्यापक जानकारी
- सुविकसित कल्पनाशक्ति जो संबंधित विज्ञान विषय से संबंधित भौतिक जगत एवं उससे जुड़े उपकरणों तथा प्रक्रियाओं की कल्पना कर सके.
- मूल पाठ में हुई भूलों अथवा अंतराल आदि को पूरा करने की योग्यता
- उपलब्ध शब्दकोशों अथवा संसाधनों से उत्तम पर्याय चयन करने के लिए विवेक
- अपनी भाषा को स्पष्टता, सटीकता एवं वस्तुपरकता से प्रयोग करने की क्षमता, तथा
- अनुवाद करने का व्यवहारिक अनुभव. जिसमें अनुवादक को वैज्ञानिक, अभियांत्रिक, भाषावविद और अच्छा लेखक होना चाहिए.

विज्ञान का अनुवाद करते समय कुछ विचारणीय बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं:

- लक्ष्य पाठक को सदैव ध्यान में रखना
- मूल लेखक द्वारा प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की रक्षा
- विज्ञान विषयों एवं भाषा की जानकारी
- विषय-संबद्ध समसामयिक एवं अद्यतन जानकारी तथा सहभागिता (थिएइएर्जे, 2002:188)
- शब्दकोश से सर्वोत्तम पर्याय निर्धारित करने की निपुणता – विवेकशीलता
- अभ्यास एवं अध्ययन से नई संकल्पनाओं के लिए उपयुक्त एवं संप्रेषणीय समानार्थी उपलब्ध करना

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक साहित्य की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है और उसका अनुवाद किन्हीं निश्चित कार्यनीतियों के अंतर्गत होता है. वैज्ञानिक साहित्य की अपनी भाषा, शैली होती है और उसमें पारिभाषिक शब्दावली का वर्चस्व होता है. विज्ञान संबंधी संकल्पनाएँ सार्वभौम होने के साथ साथ प्रयोज्यता की दृष्टि से 'स्थानीय' से भी, सम्बद्ध होती हैं क्योंकि विज्ञान दैनिक जीवन के यथार्थ को व्यक्त करता है. विज्ञान विषयों के अनुवाद में मूल के प्रति पूर्ण निष्ठता, और भाषा में स्पष्टता तथा अभिधात्मक शैली का होना अनिवार्य गुण है. रूप की अपेक्षा कथ्य प्रधानता की वांछनीयता इस प्रकार के अनुवाद का प्रमुख गुण है. वैज्ञानिक अनुवादक के लिए विषय, भाषा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी आवश्यक है और सहयोगपरक अनुवाद पद्धति अधिक कारगर सिद्ध हो सकती है. अनुवादक को विज्ञान संबंधी रुझान और जगत को यथारूप जानने एवं अन्वेषित करने की अनंत लालसा होनी चाहिए. एक तीक्ष्ण संपादकीय दृष्टि भी विज्ञान साहित्य के अनुवाद में आवश्यक है, क्योंकि किसी कारण से यदि कोई त्रुटिपूर्ण संकल्पना अथवा मुद्रण भूल मूल पाठ में रह जाती है तो उसका निराकरण होना अनिवार्य है. भारत के अतिरिक्त पूरे एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में विज्ञान साहित्य के अनुवाद की बड़े पैमाने पर आवश्यकता है. इसके लिए मूल विज्ञान लेखन को प्रोत्साहन के अलावा उसके अनुवाद पर भी सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर प्रयास करने होंगे. स्वयं वैज्ञानिकों को अंतर्शास्त्रीय अध्ययन में सहभागी होना होगा, जिससे विज्ञान को अन्य विषयों के साथ जोड़कर उसमें शोध और प्रक्रिया के प्रश्न समावेशित किए जाएँ. इससे विज्ञान के प्रति रूचि बढ़ेगी तथा ज्ञान का प्रसार होगा.

संदर्भ

1. दिनेश चमोला. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ. *इन* अनुवाद की नई परंपरा और आयाम (संपा: कृष्ण कुमार गोस्वामी, अन्नपूर्णा, ओम प्रकश), 2014. नई दिल्ली : प्रकशन संस्थान, 252-264.
2. एस एम के सक्सेना. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद : सामान्य ज्ञान. *इन* अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग. संपा. नगेन्द्र. 1993. दिल्ली विश्वविद्यालय. पृष्ठ: 254-268.
3. जयंती प्रसाद नौटियाल. अनुवाद: सिद्धांत एवं व्यवहार. 2000. दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटड.
4. ई ए नाइडा. टुवर्ड्स अ साइंस ऑफ ट्रांसलेशन. 1964. लीडन. ई जे ब्रिल्ल. पृष्ठ 223.
5. सुन्दर सरुक्की. ट्रांसलेशन एंड साइंस इन मेटा, XLVI, 4, 2001. पृष्ठ: 646-663
6. बोस, पी चन्द्र. प्रोब्लेम्स इन ट्रांसलेटिंग साइंटिफिक एंड टेक्निकल टेक्स्ट्स विद स्पेशल रेफरेन्स टू टेक्स्ट्स ऑन कंप्यूटर साइंस, आर्ट्स एंड साइंस (संपा) वेंकटेश्वर जे शास्त्री. 1994. हैदराबाद. बुक लिंक्स
7. अली आर ए हसनवी. आस्पेक्ट्स ऑफ़ साइंटिफिक ट्रांसलेशन: इंग्लिश इन टू अरबिक ट्रांसलेशन, अ केस स्टडी. ट्रांसलेशन डायरेक्टरी.कॉम
8. बेठानी थिएइएर्जे. ट्रांसलेटिंग साइंटिफिक टेक्स्ट्स *इन* एनुअल मीटिंग रिपोर्ट्स. साइंस एडिटर. 2002. नवंबर-दिसंबर वाल. 25, संख्या 6.

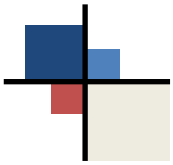

‘अतीत के चलचित्र’ में महादेवी वर्मा

अध्ययन

महादेवी के रेखाचित्र-संग्रह ‘अतीत के चलचित्र’ में समाज के उन कुछ उपेक्षित से लगने वाले चरित्रों का शाब्दिक रेखाओं के माध्यम से रेखांकन किया गया है जो समाज में आर्थिक विपन्नता तथा सामाजिक पतन-पराजय की स्थितियों में जीवन जीने को विवश से दिखते हैं।

डॉ. मानवेश नाथ दास

हिंदी-साहित्य के अंतर्गत छायावादी काव्य-धारा की प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा का हिंदी-गद्य के क्षेत्र में जो देन है वह अनेक दृष्टियों से अनुपम और विशिष्ट है। महादेवी के गद्य में संख्यात्मक अल्पता तो है, किंतु गुणात्मक गरिमा की प्रचुरता में उसकी महत्ता का रहस्य अनुस्यूत है।

महादेवी जी के गद्य-साहित्य के अंतर्गत हिंदी-गद्य की जिन विधाओं की रचनाएँ मुख्य रूप से सृजित हुई हैं वे हैं- रेखाचित्र, संस्मरण, समस्या प्रधन निबंध, संपादकीय लेख, मौलिक काव्य एवं गद्य कृतियों की भूमिकाएँ आदि। इनमें महादेवी द्वारा लिखित रेखाचित्र विशेष रूप से उल्लेख्य हैं, जिनके सृजन में महादेवी के व्यक्तित्व के चित्रकर्ती तथा कवयित्री स्वरूप के योगदान को भी प्रमुख रूप से रेखांकित किया जा सकता है।

उक्त रेखाचित्र संग्रह के रेखांकित चरित्रों में स्वंय लेखिका का चरित्र अंशतः अवश्य ही गुंफित है ऐसा कहा जा सकता है। वस्तुतः यहाँ वर्णित ग्यारह चरित्रों में सभी लेखिका के जीवन से किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही संपृक्त रहे हैं। महादेवी जी स्वंय स्वीकार करती है, “इन स्मृतियों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभाविक भी था।” और आगे वे यह भी मानती है कि, ‘‘यदि इन अधूरी रेखाओं और धुंधले रंगों की समष्टि में किसी को अपनी छाया की एक रेखा भी मिल सके, तो यह सफल है, अथवा अपनी स्मृति की सुरक्षित सीमा से हमें बाहर लाकर मैंने अन्याय ही किया है।’’

वास्तव में चित्रकला की प्रेरणा ही मूल रूप में रेखाचित्र की साहित्यिक-विधा के उद्भव का कारण स्वरूप मानी जा सकती है। डॉ. लक्ष्मण दत्त गौतम के अनुसार, “जिस प्रकार एक चित्रकार अपनी तूलिका के सहारे विविध रंगों की रेखाएँ खींच कर अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है, उसी प्रकार एक कलाकार अपने शब्दों के माध्यम से किसी चित्र का अंकन करता है। साहित्य में यही अंकन ‘रेखाचित्र’ कहलाता है।” किंतु, साथ ही सत्य यह भी है कि रेखाचित्र में व्यक्ति के साथ-साथ वातावरण, स्थान तथा व्यक्ति का व्यक्तित्व भी किसी-न-किसी रूप में अंकित हुआ करता है।

महादेवी के रेखाचित्र-संग्रह ‘अतीत के चलचित्र’ में समाज के उन कुछ उपेक्षित से लगने वाले चरित्रों का शाब्दिक रेखाओं के माध्यम से रेखांकन किया गया है जो समाज में आर्थिक विपन्नता तथा सामाजिक पतन-पराजय की स्थितियों में जीवन जीने को विवश से दिखते हैं। उक्त संग्रह में ग्यारह रेखाचित्र संकलित है। यथा, ‘रामा’, ‘भाभी’, ‘बिंदा’, ‘सबिया’, ‘बिट्टो’, ‘बालिका माँ’, ‘घीसा’, ‘अभागी स्त्री’, ‘अलोपी’, ‘बदलू’, तथा ‘लछमा’। इन सभी पुरुष तथा नारी पात्रों को

परिवार तथा समाज के भीतर जो उपेक्षित तथा गर्हित जीवन जीना पड़ता है, उसे देखकर महादेवी जी उन्हें अपने रचित 'रेखाचित्रों' के माध्यम से अपनी संपूर्ण भाव संवेदना देने का प्रयास करती है।

1

'अतीत के चलचित्र' में सर्वप्रथम 'रामा' के चरित्र का रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। रामा महादेवी जी के परिवार का एक भृत्य था, जिसे बचपन में दीन-हीन एवं असहाय अवस्था में पाकर महादेवी की माँ ने अपने परिवार में सेवक के रूप में स्थान दे दिया था। रामा का रेखाचित्र उतारती हुई महादेवी जी कहती है, ''नाटे, काले और गठे शरीरवाले रामा के बड़े नखों से लंबी शिखा तक हमारा सनातन परिचय था। साँप के पेट जैसी सपेफद हथेली और पेड़ की टेढ़ी-मेढ़ी गांठदार टहनियों जैसी उंगलियों वाले हाथ की रेखा-रेखा हमारी जानी बूझी थीं।'' रामा ने आगे महादेवी जी की माँ के आग्रह पर अपना विवाह भी किया, किंतु बाद में उसकी पत्नी उसे छोड़कर मायके चली गई। लेखिका की माँ ने उसे समझा-बुझाकर बहू को फिर से लौटा लाने को भेजा, तो फिर वह कभी लौटकर आया ही नहीं। किंतु इतने ही दिनों के परिचय ने महादेवी जी को उसे अपनी भाव संवेदनाओं के सहारे रेखाचित्र में साहित्यिक अमरता प्रदान करने को प्रेरित कर दिया।

'भाभी' शीर्षक रेखाचित्र में लेखिका ने अपने बचपन में एक माड़वारी परिवार की एक अनाथिनी किशोरी विधवा से भाभी का सामाजिक संबंध जोड़ लिया था। उसके संपर्क में लेखिका ने विधवाओं की दयनीय सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति का जो परिचय प्राप्त किया वही आधर बनता है आगे इस 'भाभी' शीर्षक रेखाचित्र के लिखे जाने का।

'बिंदा' शीर्षक रेखाचित्र में बिंदा या विंधेश्वरी नामक एक बालिका का शाब्दिक रेखांकन प्रस्तुत करती है, जो अपनी विमाता का स्नेहशून्य कटु व्यवहार का शिकार होकर अकाल-मृत्यु को प्राप्त हुई थी।

'सबिया' नामक रेखाचित्र में सबिया नाम की एक मेहतरानी का शब्द-चित्र प्रस्तुत किया गया है, जो महादेवी जी द्वारा छात्रावास में नियुक्त की गई थी। उसे आगे अपने पति और नई सौत दोनों के पालने का आर्थिक भार वहन करना पड़ा। किंतु तब भी उसका पति मैवूफ उसकी सौत गेंदा के साथ एक दिन मेला देखने जाकर फिर कभी घर लौटकर नहीं आता।

'बिट्टो' शीर्षक रेखाचित्र में भारतीय समाज में विध्वा नारियों के दुःखद जीवन का जो रूप है उसे ही रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

रेखाचित्र 'बालिका माँ' में ऐसी बाल विधवा माँ का रेखांकन किया गया है जो वास्तव में किसी पुरुष पात्र के छलपूर्ण वासनात्मक व्यवहार की शिकार बनी थी। ऐसी सामाजिक विडंबना में फँसी नारी की मुक्ति हेतु महादेवी जी कुछ विद्रोहात्मक स्वर में कहती है, ''यदि यह स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सकें कि बर्बरों तुमने हमारा नारित्व, पत्नीत्व सब तो ले लिया, पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी तो इनकी समस्याएँ तुरंत सुलझ जाए।''

'घीसा' नामक रेखाचित्र में महादेवी जी ने गंगा पार के झूंसी गाँव के एक पितृहीन निर्धन माता द्वारा संरक्षित एक बालक का रेखांकन किया है, जिसे उन्होंने उक्त गांव में कभी अन्य गरीब परिवार के बच्चों को सेवा भाव से पढ़ाते समय साथ-साथ पढ़ा देने का कर्तव्य निवाहा था। वह घीसा अपने गुरु साहब अर्थात लेखिका से इतना हिल-मिल गया था कि, एक दिन उसके असमय में भगवान के घर चले जाने का दुःख लेखिका भी भुला न पाई। उक्त रेखाचित्र का प्रणयन उसी अल्पकालिक स्नेहबंध का परिणाम माना जा सकता है।

'अभागी स्त्री' में एक वेश्या-पुत्री के जीवन का रेखांकन है, जो अपनी माँ, बाद में उससे विवाह कर लेने वाले पति के बीमार रहने तथा पति के परिवार से परित्यक्त हो आर्थिक सहारा पाने हेतु लेखिका से कोई काम-काज पा लेने के विचार से मिलने आई थी। वह अपने बीमार पति को आर्थिक विपन्नता के कारण बचा नहीं पाई। अंततः किसी विधवा आश्रम या अपनी माँ के पास न जाकर उसने सिलाई-बुनाई द्वारा आगे अपना जीवन-यापन करना आरंभ किया।

रेखाचित्र 'अलोपी' में उक्त नाम के एक अंधे युवक का रेखांकन किया है जो अपने फुफेरे भाई रग्घू के साथ लाठी के सहारे चलकर लेखिका के विद्यालय के छात्रावास में तरकारी बेचने आया करता था। लेखिका उसे अपनी संवेदना, उसकी दयनीय स्थिति को अनुभव कर दी थी। किंतु, वह भी एक दिन अकाल काल कलवित हो गया। उसी की धूमिल स्मृति का रेखांकन है रेखाचित्र 'अलोपी'।

रेखाचित्र 'बदलू' में बदलू और उसकी पत्नी रध्या का जीवन-चित्र प्रस्तुत है। इस कुम्हार दंपत्ति का जीवन भी घोर निर्धनता में बीतता रहा। किंतु, एक दिन इस कुम्हार बदलू ने सरस्वती देवी की एक अति सुंदरता मूर्ति बनाकर लेखिका को भेंट किया तो 'गुदड़ी में लाल' की भाँति दरिद्रता के दलदल में फँसे इस कलाकार की प्रतिभा को पहचान कर वह अचंभित रह गई थीं।

'अतीत के चलचित्र' संग्रह का अंतिम रेखाचित्र है-'लछमा'। लछमा एक पहाड़ी युवती थी, जिसे महादेवी जी ने पर्वतांचल में अपने अल्पकालिक निवास के समय जाना था। यह अन्य पहाड़िन स्त्रियों से कुछ भिन्न थी और इसी से अपने परिवार के छल-छद्म और तिरस्कार के आगे सिर झुकाने के बदले इसने स्वंय सहज भाव से निःस्वार्थ किंतु कर्तव्यनिष्ठ जीवन जीने का प्रयास करती हुई, लेखिका की संवेदना पाने का हकदार बन जाती हैं। यह एक अन्यतम सफल रेखाचित्र है, जिसमें चित्रित चरित्र का वाह्य एवं आंतरिक चित्र, दोनों ही समान भाव से शाब्दिक रेखांकन में उतर पाए हैं।

समग्रतः कहा जा सकता है कि 'अतीत के चलचित्र' महादेवी जी के अत्यंत ही सफल रेखाचित्रों का संकलन है, जिसमें समाज के निम्नवर्गीय दीन-हीन नर-नारी चरित्रों का रेखांकन लेखिका की सहज भाव संवेदनाओं के सहारे हो पाया है।

अल्फ्रेड हिचकॉक कैमरा तकनीकी और निर्देशन

अध्ययन

फ़िल्म देखते वक्त हमे क्या सोचना और अनुभव करना चाहिए यह अल्फ्रेड हिचकॉक सावधानीपूर्वक कैमरे के द्वारा आदेशित करते थे। एक कुशल निर्देशक यही करता है लेकिन जिस हद तक हिचकॉक दर्शकों को नियंत्रित करते हैं वो अद्वितीय है।

अल्फ्रेड हिचकॉक शुद्ध सिनेमा के पक्षधर थे। यहाँ शुद्ध सिनेमा से मेरा आशय है – लंबे संवादो का निषेध करते हुए, प्रभावशाली दृश्यों का प्रयोग कर कथ्य को आगे बढ़ाते हुए फ़िल्म द्वारा कहानी कहना। हिचकॉक ने अपनी फ़िल्म निर्देशन की जो प्रमुख तरीका अपनाया वो था- दृश्यों (visuals) पर ज़ोर देना।

लेकिन यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि विजुयल्स के साथ-साथ अल्फ्रेड हिचकॉक की फ़िल्म में एक मजबूत विषयात्मक जुड़ाव भी होता था जिससे उनमे विभिन्न मात्रा में सस्पेंस, हत्या, रोमांस, सेक्सुअलिटी और डार्क ह्यूमर दिखाई पड़ता है।

मैकगफिन [McGuffin] :-

हिचकॉक की फ़िल्में देखते वक्त जो बात मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करती है वो कहानी नहीं बल्कि कहानी कहने का तरीका है। उदाहरण के लिए उनकी अधिकतर फ़िल्मों में पीछा करने का लंबा दृश्य होता है जिसमे मुख्य अभिनेता को पकड़े जाने से बचने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व होते है– भागना, एंकाउंटर, नकार। लेकिन "क्यूँ" महत्वपूर्ण नही होता है। यह "क्यूँ" बमुश्किल ही उनकी किसी फ़िल्म में पूरी तरह से स्पष्ट किया गया है और हिचकॉक स्वयं भी यह मानते थे कि इस "क्यूँ" से दर्शकों को ज्यादा मतलब नही होता है।

हिचकॉक इस "क्यूँ" को मैकगफिन कहते थे और इसे एक ऐसे बेतुके यंत्र के रूप में परिभाषित किया जो एक्शन और सस्पेंस को प्रेरित करने मे प्रयोग किया जाता है। हिचकॉक वास्तव में अपनी फ़िल्म को दृश्यिक रूप से इतना बांध कर रखते थे कि किसी को भी इस बात की परवाह नहीं रहती थी कि पहले स्थान पर संदेहजनक परिस्थिति क्यूँ पैदा होती है। परवाह रहती थी तो सिर्फ एक्शन की जो मैकगफिन के परिणाम के रूप में घटित होता था।

मैकगफिन के कुछ उदहारण देखते हैं-

- द 39 स्टेप्स में – गुम हुए कागजात जिसमे सरकारी रहस्य होता है।
- द लेडी वैनिशेज में – एक धुन (ट्यून) जो दो यूरोपियन देशों के मध्य एक संबंध है।
- नोटोरियस में – यूरेनियम अयस्क जो कि जर्मन अजेंट द्वारा शराब के बोतलों में छिपाई होती हैं।
- नॉर्थ बाइ नोर्थवेस्ट मे मैकगफिन पर बाकी सभी फ़िल्मों की अपेक्षा सबसे कम ध्यान दिया गया है। इसे दो शब्दों "सरकारी रहस्य" के रूप मे दिखाया गया है।

फ़िल्म देखते वक्त हमे क्या सोचना और अनुभव करना चाहिए यह अल्फ्रेड हिचकॉक

प्रवीण सिंह चौहान

+91 9763706428

सावधानीपूर्वक कैमरे के द्वारा आदेशित करते थे। यही एक कुशल निर्देशक करता है लेकिन जिस हद तक हिचकॉक अपने दर्शकों को नियंत्रित करते हैं वो अद्वितीय है। वो चीजों को अपने अनुसार परिवर्तित करने मे माहिर थे। इसके लिए वो तकनीक का उपयोग करते थे जिसका एक उदाहरण हैं – वह सोद्देश्य तरीका जिसके द्वारा वो हमे प्रोप्स दिखाते हैं जो कि फ़िल्म के किसी विशेष दृश्य या प्लॉट में केंद्रीय भूमिका में होते हैं। वो अक्सर वस्तुओं पर **स्लो पैनिंग**, **एक्स्ट्रीम क्लोजअप्स** और **फ्रीज़फ्रेम** का प्रयोग करते थे। इस प्रकार से प्रोप्स के विशेष प्रस्तुति के बहुत से उदाहरण हैं – द 39 स्टेप्स में - न्यूज़पेपर, द लेडी वैनिशेज में - डाइनिंग कार में जहरीले ब्रांडी से भरे गिलास का क्लोजअप, शैडो ऑफ डाउट में - अंगूठी का क्लोजअप जब चार्ली उसे पहन कर सीढ़ियों से नीचेआती है, स्ट्रेंजर्स ऑन अ ट्रेन में - ब्रूनों की टाई का क्लोजअप, नॉर्थ बाइ नॉर्थवेस्ट में - मैचबुक जिसे फ्रीज़ शॉट मे इसकी महत्ता को बताने के लिए दिखाया गया है।

सबसे अच्छा व प्रसिद्ध उदाहरण है- **नोटोरिअस में क्रेन शॉट** का जो काफी ऊंचाई से प्रारंभ होता हैं और इंग्रिड बर्गमैन के हाथ मे पकड़ी हुए चाबी के एक्सट्रीम क्लोजअप पर समाप्त होता है। उपरोक्त शॉट्स कुछ सेकेंड्स लंबे हैं और कहानी को अकेले ही आगे बढ़ते हैं साथ ही ये सभी अल्फ्रेड हिचकॉक की नरेटिव पावर को प्रदर्शित करते हैं। यहाँ पर बताई गई सभी वस्तुएँ प्रत्येक फ़िल्म के प्लॉट में समग्र भूमिका निभाती हैं और जिस तरीके से हिचकॉक ने उन्हे फ़िल्मया है उससे यह निश्चित है कि वो कहानी में आगे तक दर्शकों के मन मे बनी रहती है।

यह एक छोटा सा उदाहरण था उन दृश्यिक तत्वो और तकनीको का जो हिचकॉक की सभी फ़िल्मों में आसानी से देखे-समझे जा सकते हैं, लेकिन वास्तव में देखा जाए तो उनकी शैली को उनकी प्रत्येक फ़िल्म के प्रत्येक सीन के प्रत्येक शॉट में देखी जा सकती है। उनके **आड़े-तिरछे एंगल्स** का उपयोग, **वाइड स्वीपिंग शॉट्स** जो अक्सर **टाइट क्लोजअप** में समाप्त होती हैं, बिना संवाद के **लंबे सीक्वेंसेज**, **रंगों का असाधारण उपयोग** (1950 के दशक की फ़िल्म में) और समान रूप से **छाया का असाधारण उपयोग**, लोकप्रिय हिचकॉक **कैमियो**, उनकी प्रमुख महिला किरदारों का लुक और स्टाइल, उनका **डार्क ह्यूमर** का उपयोग और **सर्कुलर शॉट्स** जो अभिनेताओं के चारो ओर पैन करता है विशेषकर रोमॅन्टिक दृश्यों में।

आशा है आपको अल्फ्रेड हिचकॉक की निर्देशन और कैमरा तकनीकी को समझने में काफी मदद मिलेगी.

Alexander Graham Bell

Educator, Scientist, Inventor, Linguist (1847–1922)

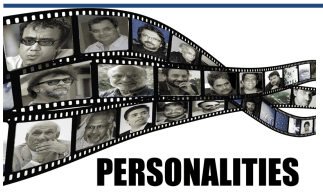

व्यक्तित्व

Alexander Graham Bell was one of the primary inventors of the telephone, did important work in communication for the deaf and held more than 18 patents. Alexander Graham Bell - America Listens (TV-PG; 1:11) Alexander Graham Bell used all his resources to get Americans to use his new invention, the telephone.

"Great discoveries and improvements invariably involve the cooperation of many minds. I may be given credit for having blazed the trail, but when I look at the subsequent developments I feel the credit is due to others rather than to myself."
—Alexander Graham Bell

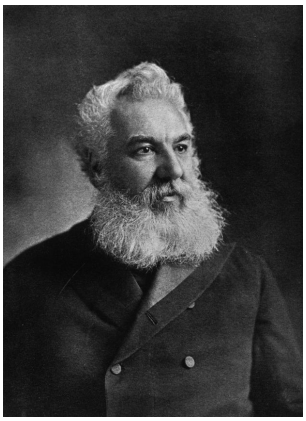

Alexander Graham Bell was born on March 3, 1847, in Edinburgh, Scotland. His education was largely received through numerous experiments in sound and the furthering of his father's work on Visible Speech for the deaf. Bell worked with Thomas Watson on the design and patent of the first practical telephone. In all, Bell held 18 patents in his name alone and 12 that he shared with collaborators. He died on August 2, 1922, in Cape Breton Island, Nova Scotia, Canada.

Early Life

Alexander Graham Bell was born on March 3, 1847, in Edinburgh, Scotland. The second son of Alexander Melville Bell and Eliza Grace Symonds Bell, he was named for his paternal grandfather. The middle name "Graham" was added when he was 10 years old. He had two brothers, Melville James Bell and Edward Charles Bell, both of whom died from tuberculosis.

During his youth, Alexander Graham Bell experienced strong influences that had a profound effect on his later life. Bell's hometown of Edinburgh, Scotland, was known as the "Athens of the North," for its rich culture of arts and science. His grandfather and father were experts on the mechanics of voice and elocution. Alexander's mother, who was nearly deaf, became an accomplished pianist and inspired him to undertake big challenges.

Editors of Biography dot com

Eliza home schooled Alexander and instilled an infinite curiosity of the world around him. He received one year of formal education in a private school and two years at Edinburgh's Royal High School. Though a mediocre student, he displayed an uncommon ability to solve problems. At age 12, while playing

with a friend in a grain mill, he noticed the slow process of husking the wheat grain. He went home and built a device with rotating paddles and nail brushes that easily removed the husks from the grain.

Early Attempts to Follow His Passion

Young Alexander was groomed early to carry on in the family business, but his headstrong nature conflicted with his father's overbearing manner. Seeking a way out, Alexander volunteered to care for his grandfather when he fell ill in 1862. The elder Bell encouraged young Alexander and instilled an appreciation for learning and intellectual pursuits. By age 16, Alexander had joined his father in his work with the deaf and soon assumed full charge of his father's London operations.

On one of his trips to America, Alexander's father discovered its healthier environment and decided to move the family there. At first, Alexander resisted, for he was establishing himself in London, but eventually relented after both his brothers had succumbed to tuberculosis. In July, 1870, the family settled in Brantford, Ontario, Canada. There, Alexander set up a workshop to continue his study of the human voice.

Passion for Shaping the Future

In 1871, Alexander Graham Bell moved to Boston and began work on a device that would allow for the telegraph transmission of several messages set to different frequencies. He found financial backing through local investors Thomas Sanders and Gardiner Hubbard. Between 1873 and 1874, Bell spent long days and nights trying to perfect the harmonic telegraph. During his experiments, he became interested in another idea, transmitting the human voice over wires. The diversion frustrated Bell's benefactors and Thomas Watson, a skilled electrician, was hired to refocus Bell on the harmonic telegraph. But Watson soon became enamored with Bell's idea of voice transmission and the two created a great partnership with Bell being the idea man and Watson having the expertise to bring Bell's ideas to reality.

Through 1874 and 1875, Bell and Watson labored on both the harmonic telegraph and a voice transmitting device. Though at first frustrated by the diversion, Bell's investors soon saw the value of voice transmission and filed a patent on the idea. For now the concept was protected, but the device still had to be developed. On March 10, 1876, Bell and Watson were successful. Legend has it that Bell knocked over a container of transmitting fluid and shouted, "Mr. Watson, come here. I want you!" The more likely explanation was Bell heard a noise over the wire and called to Watson. In any case, Watson heard Bell's voice through the wire and thus, he received the first telephone call.

Alexander Graham Bell - America Listens (TV-PG; 1:11) Alexander Graham Bell used all his resources to get Americans to use his new invention, the telephone.

With this success, Alexander Graham Bell began to promote the telephone in a series of public demonstrations. At the Centennial Exhibition in Philadelphia, in 1876, Bell demonstrated the telephone to the Emperor of Brazil, Dom Pedro, who exclaimed, "My God, it talks!" Other demonstrations

followed, each at a greater distance than the last. The Bell Telephone Company was organized on July 9, 1877. With each new success, Alexander Graham Bell was moving out of the shadow of his father.

On July 11, 1877, Alexander Graham Bell married Mable Hubbard, a former student and the daughter of Gardiner Hubbard, his initial financial backer. Over the course of the next year, Alexander and Mable traveled to Europe demonstrating the telephone. Upon their return to the United States, Bell was summoned to Washington D.C. to defend his telephone patent from law suits by others claiming they had invented the telephone or had conceived of the idea before Bell.

Over the next 18 years, the Bell Company faced over 550 court challenges, including several that went to the Supreme Court, but none were successful. Even during the patent battles, the company grew. Between 1877, and 1886, over 150,000 people in the U.S. owned telephones. Improvements were made on the device including the addition of a microphone, invented by Thomas Edison, which eliminated the need to shout into the telephone to be heard.

Pursuing His Passion in His Final Years

By all accounts, Alexander Graham Bell was not a businessman and by 1880 began to turn business matters over to Hubbard and others so he could pursue a wide range of inventions and intellectual pursuits. In 1880, he established the Volta Laboratory, an experimental facility devoted to scientific discovery. He also continued his work with the deaf, establishing the American Association to Promote Teaching of Speech to the Deaf in 1890.

In the remaining years of his life Bell worked on a number of projects. He devoted a lot of time to exploring flight, starting with the tetrahedral kite in 1890s. In 1907, Bell formed the Aerial Experiment Association with Glenn Curtiss and several other associates. The group developed several flying machines, including the *Silver Dart*. The *Silver Dart* was the first powered machine flown in Canada. He later worked on hydrofoils and set a world record for speed for this type of boat.

In January 1915, Bell was invited to make the first transcontinental phone call. From New York, he spoke with his former associate Thomas Watson in San Francisco.

Bell died peacefully on August 2, 1922, at his home in Baddeck on Cape Breton Island, Nova Scotia, Canada, on August 2, 1922. The entire telephone system was shut down for one minute in tribute to his life.

DANGAL

समीक्षा

DANGAL is a flawless piece of work -- it's captivating, unpredictable, spellbinding, entertaining andmost importantly, DANGAL is seeped in Indian ethos. The highs and lows, the triumphs and failures, the laughter and heartbreak…

Aamir Khan -- the name is synonymous with dedication, perfection and qualitative cinema… His films have set new benchmarks at the ticket windows: GHAJINI was the first Hindi film to gross Rs 100 cr… 3 IDIOTS created a sensation when it crossed Rs 200 cr mark [it was the first Hindi film to cross the magical figure]… PK, the highest grosser to date in the domestic market [Hindi films], was also the first film to cruise past Rs 300 cr…

Obviously, DANGAL carries colossal expectations on its shoulders. The last biggie of the year 2016 is also expected to bail out the industry, since 2016 hasn't been kind to Hindi cinema. The biz is at an all-time low, with most films sinking faster than Titanic.

Let's clarify a pertinent doubt before I proceed ahead… DANGAL is not similar to SULTAN. There's a world of a difference between the two films that eye the same sport: Wrestling. SULTAN was a work of fiction, with focus on the love story, while DANGAL is based on the true story of Mahavir Singh Phogat, who trained his daughters Geeta and Babita and made them world class wrestlers. So there!

2016 has witnessed stories based on real-life characters/incidents. In addition, films soaked in reality, generally speaking, take the realistic route without bowing to market diktats or over-stretching realities. DANGAL stays true to the material, yet its efficient storyteller Nitesh Tiwari along with the team of writers [story idea: Divya Rao; writers: Nitesh Tiwari, Piyush Gupta, Shreyas Jain, Nikhil Mehrotra] ensures that the film connects with every segment of moviegoers. Besides, the writers stay away from the familiar and tried-and-tested tropes to woo Aamir's legion of fans, which is credible.

DANGAL is a flawless piece of work -- it's captivating, unpredictable, spellbinding, entertaining and never overstays its welcome [run time: 2.41

Transframe

Mumabi Team

hours]. Most importantly, DANGAL is seeped in Indian ethos. The highs and lows, the triumphs and failures, the laughter and heartbreak… you smile, you laugh, you weep, you cheer, you feel ecstatic… DANGAL encompasses it all adroitly, with the finale leaving you exhilarated.

The plot: Mahavir Singh Phogat [Aamir Khan] is a wrestler whose sole dream is to win gold for India in the sport of wrestling and since he is unable to do so himself, he decides that he will train his son to become a champion. However, Mahavir is blessed with daughters and feels his dream of winning a medal for India lies shattered.

One day, Mahavir gets to know that his young daughters have had an altercation with neighbourhood boys and bashed them black and blue. That's when he realises that his dream of winning a gold medal for the country in wrestling could be achieved by his daughters. Mahavir decides to train his young daughters into world class wrestlers.

The girls are reluctant initially and find it tough to cope with the gruelling training sessions, but soon become proficient in the sport. Will Geeta and Babita manage to fulfil their father's dream?

After having directed CHILLAR PARTY and BHOOTHNATH RETURNS, Nitesh Tiwari delivers his most accomplished work so far. Most films take a long time to come to the point, but the middle and final acts of DANGAL are as attention-grabbing and enticing as its first act. Tiwari deserves brownie points for narrating the story with flourish and the message that the film conveys resonates loud and clear, without getting preachy at any point. The narrative style is simplistic, yet solid and that's what catches your eye.

Emotions have always been the mainstay of Aamir Khan's films and DANGAL is no exception. They are genuine and relatable. Besides, there's a strong emotional connect as DANGAL depicts the delicate relationship shared by a father and his daughters most realistically. The drama is spot-on and the emotional quotient is poignant and heartrending. The penultimate moments take the film to an all-time high, imparting the sheen and sparkle that it deserves.

Pritam contributes a couple of winning melodies that compliment the goings-on delightfully. 'Haanikaarak Bapu', 'Dhaakad', 'Gilehriyaan' and the title track are already well-liked and the best part is, they have been smartly integrated into the proceedings. The background score is effectual and enhances the impact of the drama. The DoP [Setu] deserves tremendous praise. The frames do complete justice to the vision of the director. Dialogue empowers the film wonderfully and at places, are clap-worthy.

The wrestling sequences are superbly executed. Be it the training sessions or the dhobi-pachhads or vanquishing the opponents in the akhada and in the ring, it's a delight to watch these sequences on

screen. Will surely evoke whistles and applause. Editing [Ballu Saluja] is razor-sharp and watertight. There's no room for restlessness or boredom here.

DANGAL is, without a shred of doubt, an Aamir Khan show all the way. The supremely skilled actor returns after a hiatus [PK] with yet another sterling act that doesn't miss a beat. He takes giant strides as an actor and gives the film the much-needed power. His expressions, body language and the much-talked-about transformation from a fit and fine young wrestler to a pot-bellied, middle-aged father speak volumes. Another commanding performance that needs to be highlighted is that of Sakshi Tanwar. She compliments Aamir's character marvellously, displaying the varied emotions seamlessly.

Both, Fatima Sana Shaikh and Sanya Malhotra inject freshness to their respective characters. Fatima is fantastic as Aamir's daughter, who makes her father and nation proud of her achievements. She is in top form. Ditto for Sanya, who makes her debut with DANGAL. The ease with which she portrays her role is applaud-worthy. As a matter of fact, the relationship that Fatima and Sanya share with their on-screen parents [Aamir and Sakshi] seems straight out of life and identifiable.

The actors who portray their younger parts -- Zaira Wasim and Suhani Bhatnagar -- excel. Frankly, one is so invested in the characters that it makes it easy to root for them as they go from strength to strength during the course of the film.

Aparshakti Khurrana is an actor to watch out for. Enacting the part of Aamir's nephew, the youngster not only contributes immensely to some lively and wonderful moments, but also delivers a first-rate performance. Ritwik Sahore [Aparshakti's younger part] is equally efficient. Girish Kulkarni [coach] is, again, a hugely competent actor, who shines in his part. Vivan Bhathena, in a cameo, is perfect.

On the whole, DANGAL is a masterpiece. A terrific film that stays in your heart and remains etched in your memory much after the screening has concluded. A brilliant film that restores your faith in Hindi cinema. Actually, it won't be erroneous to state that DANGAL is the finest film to come out of the Hindi film industry in a long, long time and mark my words, it will be remembered as a classic in times to come. It blends drama, emotions, sportsmanship and patriotism extraordinarily… the icing on the cake being Aamir Khan's towering act.

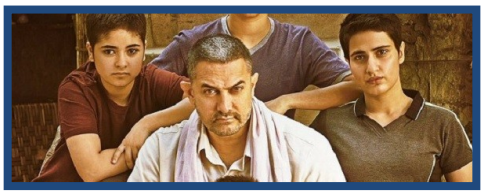

DEAR ZINDAGI

समीक्षा

Bollywood has witnessed many a 'slice of life' films trying their luck at the Box-Office. This week's release is the Shah Rukh Khan-Alia Bhatt starrer DEAR ZINDAGI, which also happens to be of the same genre. Will DEAR ZINDAGI breathe 'life' at the Box-Office or will it prove 'Dearly' to its makers, let's analyze.

DEAR ZINDAGI comes across as a slow-paced cerebral and contemporary slice of life tale about the challenges today's generation of girls face in a rapidly shifting landscape.

DEAR ZINDAGI is a slice of life film, which gives an introspective insight about the various challenges that life offers to an individual and the way each one deals with these challenges. The film starts off with the 'on-the-sets' introduction of the extremely talented cinematographer Kaayra (Alia Bhatt), for whom work perfection towers above everything else in life. Not the one to make any kind of compromise in her work, she also harbours a heartfelt dream of directing her full-fledged feature film some day. One day, she gets a dream offer from Raghavendra (Kunal Kapoor), for co-directing a prestigious feature film on the foreign shores. Since Kaayra is in love with Raghavendra and vice versa, Kaayra becomes extremely happy thinking that she would be able to combine work with pleasure. Even before the feeling of her dream coming true sinks in, she gets a shock of her life when she gets to know that, Raghavendra has got engaged to his ex-girlfriend on the foreign shores. This news totally shatters the visibly distorted Kaayra. That's when she happens to meet the renowned psychiatrist Dr. Jehangir Khan aka Jag (Shah Rukh Khan). Thereafter starts her therapy session with Jag. It is through these sessions that Jag gets to know that Kaayra has been silently suffering from many issues caused during her tender childhood. Gradually during the therapy sessions, a strong bond develops between Kaayra and Jag, so much so that she openly confides all about her past and present day happenings to Jag. While doing so, Kaayra realises that she actually has fallen for Jag. What happens to Kaayra in the end, whom she chooses to spend her life with, does the counsellor-patient relationship between Kaayra and Jag get converted into a love relationship, is what forms the rest of the film.

Transframe

Mumabi Team

The story and screenplay (Gauri Shinde) of DEAR ZINDAGI is a sincere attempt in the genre of slice of life. One has to really give it to Gauri Shinde for having tried to present the complications of life in a simplified manner. The irony of the film remains in the fact that, despite the film's characters being relatable, the proceedings of the film are simply opposite. All of this may make the audiences fail to find resonance with it. On the other hand, because of the film's dialogues (Gauri Shinde) being extremely lucid, it will definitely find its echo amongst the viewers. The film has got its humour intact and in right proportions. Do not miss scenes like Shah Rukh Khan's introduction, the first meeting between Shah Rukh Khan and Alia Bhatt and Alia Bhatt's emotional outburst during the pre-climax.

When Gauri Shinde made her directorial debut with the Sridevi starrer ENGLISH VINGLISH, she showed immense spark of a director with an ability to not just touch the chord of the audiences, but also stir it with her story telling and directorial abilities. While her attempts to make DEAR ZINDAGI in the same league of ENGLISH VINGLISH seems visible in every frame, what does not work in the film's favour are its length (mostly the second half), its disconnect with the audiences and the snail-paced narrative of the film. If that wasn't enough, despite the flying start in its first half, the film gets preachy and sermonising, which lands up testing the patience of the viewers. For all those who want to see Shah Rukh Khan and Alia Bhatt in their elements are bound to feel a bit disappointed, because the film starts behaving like a therapy session in its second half. Despite all this, one has to give her full credits for having extracted the best performances from the entire star cast of the film.

As for the performances, DEAR ZINDAGI finds its true calling in Alia Bhatt and Shah Rukh Khan. After having done the hard hitting UDTA PUNJAB, Alia Bhatt has once again proved, with DEAR ZINDAGI, that why is she one of the finest actresses of Bollywood. Film after film, Alia Bhatt is simply growing from strength to strength. The flawlessness with which she infuses emotions in her character is something that needs to be seen in order to be believed. Alia Bhatt's portrayal of a naive and ingenuous girl comes across as pleasant and striking. Be it Kunal Kapoor, Ali Zafar, Angad Bedi or Aditya Roy Kapur, the onscreen chemistry that Alia Bhatt shares with all her co-stars is simply amazing. But, what really takes the cake is her impeccable onscreen chemistry with Shah Rukh Khan that grabs the audiences by their collar. Shah Rukh Khan, on the other hand, does an equally fine job with his character. What makes DEAR ZINDAGI different from other Shah Rukh Khan starrers is the fact that, in this film, despite Shah Rukh Khan being the 'hero', does not let that overshadow Alia Bhatt even a bit. It is this factor that works tremendously in the favour of the film. One cannot deny the fact that DEAR ZINDAGI definitely is Shah Rukh Khan's finest and matured role after CHAK DE! INDIA. The rest of the actors (Kunal Kapoor, Ali Zafar, Angad Bedi, Ira Dubey and Aditya Roy Kapur) excel in their respective roles.

Even though DEAR ZINDAGI does not have any superlative music (Amit Trivedi), the songs are not

thrusted and do not act as a roadblock in the scenes. The film's background score (Amit Trivedi) contributes decently to the film's progress. The flip side of DEAR ZINDAGI is that the movie is devoid of chartbuster music, romance and action. And this absence will be felt in small town and cities where the audience will find the movie bereft of any entertainment.

While the film's cinematography (Laxman Utekar) is decent, its editing (Hemanti Sarkar) could have been more tighter towards the second half.

On the whole, DEAR ZINDAGI comes across as a slow-paced cerebral and contemporary slice of life tale about the challenges today's generation of girls face in a rapidly shifting landscape.

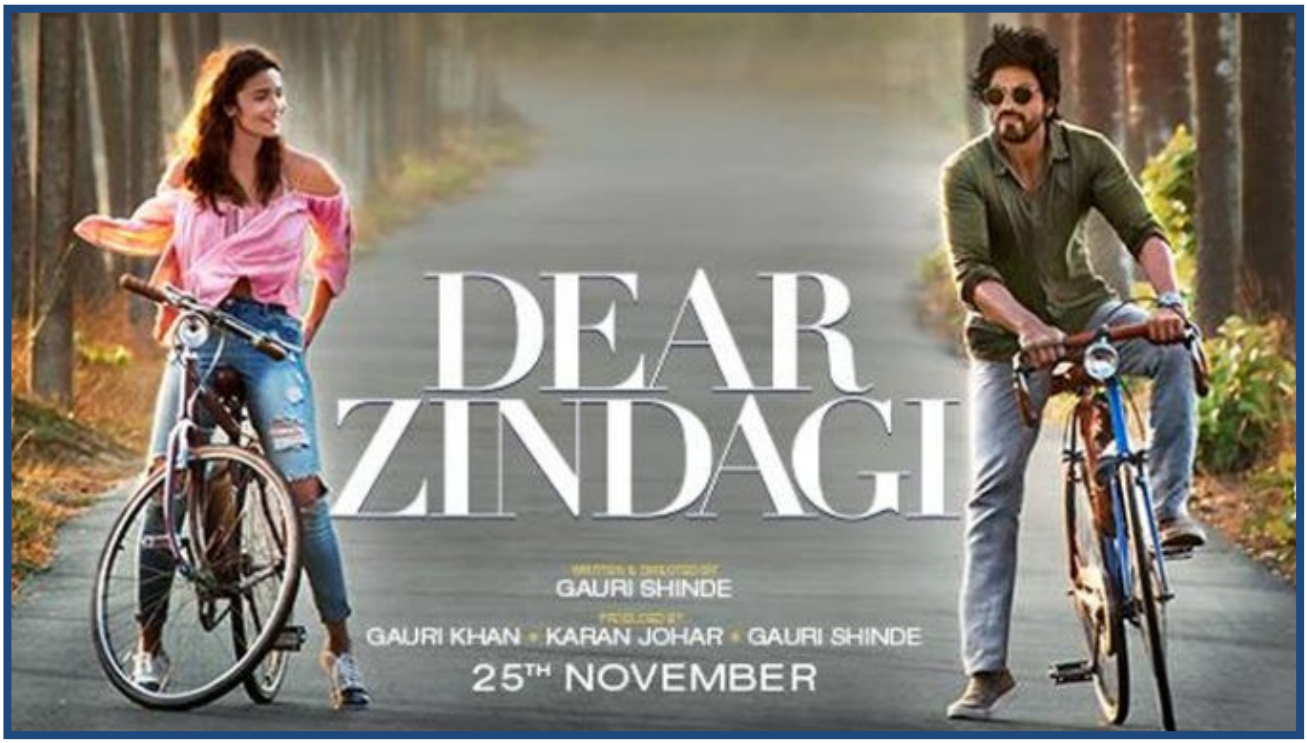

ROCK ON 2

समीक्षा

After having dabbled in advertising, Shujaat Saudagar makes his Bollywood debut as a director with ROCK ON 2. Without mincing any words, one has to admit that he has failed to present a credible story.

ROCK ON 2 starts off with the voiceover narration of 'KD' aka Killer Drummer aka Kedar Zaveri (Purab Kohli). The story then mirrors upon the distances covered by Magik band's members from the prequel till today. Aditya Shroff aka Adi (Farhan Akhtar) gets settled in Shillong to lead an isolated life as 'repentance' over a certain mistake. It is here that he finds peace by running his self-initiated 'Farmers' Co-operative' and a school for the poor children. Even though 'Farmers' Co-operative' works selflessly towards the benefits of the farmers, it just does not go well with the local governing officer of that area. On the other hand, Joseph Mascarenhas aka Joe (Arjun Rampal) becomes a successful entrepreneur as well as a judge in one of the TV reality shows. One day, on the eve of Adi's birthday, the entire 'Magik' team springs up a surprise by paying him a visit in the North East to celebrate his birthday. Despite the happy mood, there looms an atmosphere of tension, anger, repentance and anxiety amidst everyone. One fine day, 'Magik' sees the inclusion of a struggling musician Uday (Shashank Arora) alongwith Jiah Sharma (Shraddha Kapoor) as its new members. On the eve of the performance, Jiah chickens out on stage itself and is unable to perform because of her father's resistance to western music. On the other hand, Adi's adopted village in Shillong gets gutted down due to forest fire. And the money given by the Central government for the welfare aid of the affected farmers gets gulped down by a corrupt government officer in Shillong. This is when Adi and his rock band plan to organise a rock concert in Shillong in order to highlight the plight of the helpless villagers. What is the reason for 'Magik's members never-ending guilt, do Adi and his band members become successful in their uphill task of organising a rock show amidst rock solid resistance from their area's officer, does Jiah's father accept her modern singing and what secret is Adi hiding from Jiah, is what forms the rest of the story.

Transframe

Mumabi Team

When ROCK ON 2's promos were released, it only rekindled many memories associated with its predecessor ROCK ON!! In reality, ROCK ON 2 sings an extremely different tune (in literal sense). First things first. With absolutely no

head or tail to the script (Pubali Chaudhuri, Abhishek Kapoor), the film lands up being a confused mish -mash of too many things. Also, because of the lack of a strong and convincing storyline, the film simply flows all over the place without any 'direction'. None of the film's characters are well etched or defined, and hence they fail to build any emotional bond with the viewers. As a result of this, the viewers do not feel sympathetic or empathic towards any of the characters. As the film drags endlessly, one just cannot help feeling indifferent to the happenings on screen. In an attempt to incorporate multiple issues in the film's story, the film's writers land up meaninglessly infusing story angles like social situation of the North East India, the divide between Indian and classical music, relationship struggles between father-daughter, husband-wife and even a stalker and his target. The film's dialogues are very average with no outstanding one liners.

After having dabbled in advertising, Shujaat Saudagar makes his Bollywood debut as a director with ROCK ON 2. Without mincing any words, one has to admit that he has failed to present a credible story. He had no story idea to take his characters go on a journey. Most lead characters seem to have moved on in life and are forcefully brought in together to make a sequel. Shujaat Saudagar definitely has a long way to go as far as story telling in feature films is concerned.

As for the film's performances, the film solely focuses on Farhan Akhtar. He tries his best to hold this mess together, but, after a point, he too seems to give up. His character is so delusional that he probably needs therapy rather than a guitar! Mind you, we are not joking when we say that. ROCK ON 2 focuses only on Farhan Akhtar's character, who is eternally confused and that too... for no credible reason! His character in the film gets so depressing and illogical, that even his on screen wife (Prachi Desai) refuses to take it any longer. Arjun Rampal, on the other hand, is completely wasted and looks totally disinterested in the film. It's a real pity because, Arjun Rampal had won a National award for the prequel (ROCK ON!!) of this same film. Purab Kohli tries to bring in some genuine emotion, but, because he barely gets any space, his attempts go wasted. On the other hand, there's Shraddha Kapoor, who looks endlessly lost in the film. She never gets a grip of her poorly written character Jiah, who is just wandering around in the film. All of these only add to the mess called ROCK ON 2. Other actors like Shashank Arora, Prachi Desai, Shahana Goswami and Kumud Mishra also barely manage to exist in this confused script.

For a film like ROCK ON 2, one expects a mind-blowing music album (Shankar-Ehsaan-Loy) with chartbuster tracks. Sadly, there's not a single track that stays back with you. The pace of the film is so slow, that even its music doesn't help. The film's background music is average.

While the film's cinematography (Marc Koninckx) is average, editing (Anand Subaya) could've been tighter.

TUM BIN 2

समीक्षा

The year 2001 saw the release of TUM BIN which made overnight stars out of its lead starcast that comprised of Priyanshu Chatterjee, Himanshu Malik, Rakesh Vashisth and Sandali Sinha. This week sees the release of the film's sequel TUM BIN 2.

TUM BIN 2 is a couple's roller coaster ride in the lives of friends turned lovers, which mirrors the ups and downs of their lives. The film starts off with an untoward and unexpected skiing accident of Amar (Aashim Gulati). When the rescue team gives up their hope of finding Amar's body, this leaves his fiancée Taran (Neha Sharma) and Amar's loving caring father Papaji (Kanwaljeet Singh) with no hope of finding him ever. Unable to bear the grief of Amar's loss, Taran withdraws herself from the world and goes into a nutshell. One fine day, Papaji introduces his late friend's son Shekhar (Aditya Seal) to Taran and her lovely and lively sisters. Seeing Taran in sorrow, Shekhar tries his level best to bring a smile on her face. Shekhar also helps Taran immensely in realising her dream of setting up a confectionary business. Amidst all the proceedings, Taran not just tries to forget her past and Amar, but also gradually falls in love with the happy-go-lucky Shekhar. Suddenly, one fine day, out of the blue, Papaji gets a call from Amar, whom everyone thought was dead long ago. Amar is extremely happy to be united with his loving family... especially Taran. While on one hand, love gets rekindled between Taran and Amar, on the other hand, Shekhar plans to leave everyone and let Taran and Amar have a happy life ahead together. The innocent Amar, who is totally unaware of the love affair between Taran and Shekhar, starts dreaming of his future with Taran. That's when Taran confesses to Amar about her feelings for Shekhar. What happens to the love affair between Taran and Amar, whom does Taran ultimately go with and what is the truth that Papaji had been hiding about Amar all the while, is what forms the rest of the story.

The film, in totality, does live upto the expectations that the trailers offered. The screenplay of TUM BIN 2 (Anubhav Sinha) seems heavily inspired by TUM BIN. It's a typical conventional story that has been witnessed in Bollywood before.

When TUM BIN 2's promos were released, it gave the audience a glimpse of a

Transframe

Mumabi Team

musical experience that the film offered. The film, in totality, does live upto the expectations that the trailers offered. The screenplay of TUM BIN 2 (Anubhav Sinha) seems heavily inspired by TUM BIN. It's a typical conventional story that has been witnessed in Bollywood before. The presence of loopholes in the film's screenplay does, at times, make the film less convincing (more towards the second half). Despite all this, it's the treatment that's meted to TUM BIN 2, which makes it worthwhile. Even though the film does not boast of any kind of memorable one liners, the film's dialogues are lucid without going over the top. Even though the humour element is present in the film, it is in negligible proportion. Do not miss the 'India meets Pakistan' scene in the film, in order to know what we are talking about.

After having directed the sci-fi RA.ONE, Anubhav Sinha had been missing from the scene for some time now. His directorial work in TUM BIN 2 makes up for his absence. While the film's first half sets up the ambience and the plot of the film, the film's second half appears a far bit stretched. The drama that unfolds during the second half is way too cliché, something that Bollywood has witnessed many times in the past. Even though Anubhav Sinha stays true to the script and the legacy of TUM BIN, there are times when the film tends to go astray. Had the length of the second half of the film been a bit shorter, it definitely could have worked in the favour of the film. The 'oscillation' of the girl between her two lovers seems to test the patience of the viewers after a certain point.

As for the performances, the film rides majorly on the shoulders of the talented Neha Sharma. Besides being a visual delight, Neha Sharma is indeed a delight in TUM BIN 2, in terms of her performance. She is followed a close second by Aditya Seal, whose last film was the forgettable PURANI JEANS. Aditya Seal delivers a restrained performance in TUM BIN 2 and has handled the emotional scenes really well. On the other hand, after having carved a name for himself on TV, Aashim Gulati makes his Bollywood debut with TUM BIN 2. Despite not being majorly present in the film's first half, he ensures his place under the sun in the film's second half.

One of the major reasons for TUM BIN to be a runaway hit at the Box-Office was its melodious music. TUM BIN 2 is no different. Music composer Ankit Tiwari has composed melodious music for TUM BIN 2, which acts as one of the major USPs and the driving force for the film. Amongst the other tracks, it's the mellifluous ghazal rendered by the late Jagjit Singh, which, once again acts as a chartbuster track in TUM BIN 2, just like what it was in TUM BIN.

The film's cinematography (Ewan Mulligan) is top-notch. The way in which he has presented the film and shot the locations are extremely top-notch and exemplary. On the other hand, the film's editing (Farooq Hundekar) could have been tighter. On the whole, TUM BIN 2 is a decent love triangle with a lengthy second half.

BEFIKRE

समीक्षा

Ever since the inception of the Yash Raj Films banner (YRF), almost every film of theirs is a celebration in itself. After having made his debut as a director with the blockbuster film DILWALE DULHANIA LE JAYENGE, Aditya Chopra went onto make a handful of films, which too turned out to be box-office successes. After having directed RAB NE BANA DI JODI, Aditya Chopra returns to direction after 8 long years with the coming-of-age film titled BEFIKRE, which releases this week. Will BEFIKRE turn out to be a 'carefree' hit at the Box-Office, or will it be a matter to worry about for its makers, let's analyze.

BEFIKRE, which celebrates being carefree in love, is a story about a couple's ups and downs and their ultimate realization of love .BEFIKRE is an urban youth centric fun entertainer with a new age theme which will find patronage with the youth.

BEFIKRE, which celebrates being carefree in love, is a story about a couple's ups and downs and their ultimate realization of love. The film starts off with a stereotyped break up scene between Dharam (Ranveer Singh) and Shyra (Vaani Kapoor) which ends up with Dharam calling Shyra a 'slut', which hurts her the most. This is followed by a flashback of events which mirrors their yesterday and connects it with their today. The flashback sees a young and carefree Dharam landing up in Paris at the behest of his friend, who gives him a job of a stand-up comedian in his night club. On one of the party-hopping spree, Dharam meets a tour guide Shyra, a French girl of Indian origin. A couple of casual encounters later, the strong minded Dharam and Shyra decide to have a live in relationship, vowing not to say 'stupid' things like 'I love you', because it will put an end to their carefree lives. Even when they break up with each other, they even land up celebrating that as well. All is well till the time a smart and well educated Anya (Armaan Ralhan) enters Shyra's life. After a few meetings and partying with Shyra, Anya proposes marriage to her. When Dharam gets to know about Shyra's marriage, he shocks Shyra by announcing his marriage to a French girl Christine. What happens after that, are a series of events that changes everyone's equation with each other. What are the events that change the course of their lives, do Shyra and Dharam ever break their rule and mouth the three magic words to each other, who does Shyra choose ultimately between Dharam and Anya, is what forms the rest of the story.

Transframe

Mumabi Team

When BEFIKRE's promos were released, while the film resembled to be a kiss-fest, it did not give out even an ounce of the plot. While BEFIKRE may come across as an original piece of work, one can't help overlook the similarities with the French film LOVE ME IF YOU DARE. Even though such unusual concepts are unfamiliar to the Indian audiences' taste and sensitivity, full marks to Aditya Chopra for having presented BEFIKRE in a very novel manner. While it may resonate well with the youth of today, the traditional audiences might find it shocking to digest.

The film's screenplay (Aditya Chopra) is a coming-of-age, fast paced, entertaining and has more to it than just the kisses, dares and frivolous one-night stands. The characterisations in the film are strong and the dares form the highpoint of the enterprise. What keeps the audiences hooked to their seats is the fact that each of the dares keep on becoming more audacious and adventurous than the previous ones (even though they are a part of a song and not the extended screenplay). The film's dialogues (Aditya Chopra, Sharat Katariya) are funny, romantic, naughty, heartfelt and poignant... all at the same time. It will surely find its resonance with the audiences (esp. the Gen-Next). Even though the French dialogues in certain portions might act as a hindrance, it remains true to the ethos of the script.

After having directed films like DILWALE DULHANIA LE JAYENGE (DDLJ), MOHABBATEIN and RAB NE BANA DI JODI, Aditya Chopra returns to direction yet again with BEFIKRE. For him, the film is a total tectonic shift from his DDLJ days, where traditions and old age theme ruled the roost. It won't be wrong to say that Aditya Chopra had completely reinvented himself with BEFIKRE, which is a fun entertainer with basic Indian values. The film is about how you can retain your 'Indian-ness', and, yet be a global citizen and find goodness in cultural values of other countries. On the whole, Aditya Chopra gives one more reason as to why he is one of the best story tellers in Bollywood today. While the film's first half does not have even a single dull moment and is lively, it's the second half that dips a bit (more towards when Anya gets introduced in the story). But the unpredictably silly, yet, hilarious climax more than makes up for the same. Do not miss scenes like the pre climax sangeet, Ranveer Singh searching for 'corn flake', Karaoke sessions between Ranveer, Vaani and Arman.

As for the performances, the film rides majorly on the (sturdy) shoulders of Ranveer Singh, who has time and again, reinvented himself with every passing film. Besides his perfect comic timing, the energy and the freshness that he brings to the screen is extremely infectious. After having played a serious character in the historic last film BAJIRAO MASTANI, Ranveer Singh takes a complete U-turn as far as his character in BEFIKRE is concerned. He not only lives upto the film's title, but also justifies every ounce of the character. The best part about him is that, he is unlike any other star and just believes in being himself, which is what makes him unique. On the other hand, after having debuted with SHUDDH DESI ROMANCE, Vaani Kapoor exhibits her screen presence in BEFIKRE with élan and style. She not just complements Ranveer Singh's character in the film, but also, walks shoulder to

shoulder with him as far as performances are concerned. There are scenes wherein, besides coming across as a super-confident girl, she looks super hot. She is not at all camera shy and displays her body with utmost ease. Armaan Ralhan is definitely a find of the film. Rest of the characters in the film help to carry the film forward.

The music (Vishal-Shekhar) of BEFIKRE goes well with the spirit and theme of the film. Despite the album having half a dozen tracks, the snappy duration of the film's soundtrack (26 minutes) helps it fit in extremely well into the film's narrative. The film's soundtrack is, by far, one of the best soundtracks of the year. Tracks like 'Nashe Di' and 'Ude Dil Befikre' are already a rage all over. The film's background score (Mikey McCleary) helps film's proceedings in a big way.

The film's cinematography (Kaname Onoyama) is outstanding. The way in which he has shot the locations (esp. Paris) are extremely superlative and top-notch. In other words, BEFIKRE looks like a blatant promotional exercise of French Tourism. The film's editing (Namrata Rao) is crisp and bang-on.

On the whole BEFIKRE is an urban youth centric fun entertainer with a new age theme which will find patronage with the youth.

देशज भाषाई लेखन और पत्रकारिता : चुनौतियों के बीच संभावनाएं

(विशेष संदर्भ: झारखंड)

शोध

प्रमुख आदिवासी भाषा संथाली में ही चांदो मामो, चेचिक, देबान तेनगुन, दिशोम बेउरा, फागुन, हेंदे अरसी, जिवी, मानभूम संवाद, मार्सल ताबोन, रापज सावंत बेवरा, संदेश सकम, सिली, द संघायनी, तोरी सुतम जैसी दर्जन भर से अधिक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्र -पत्रिकाओं के प्रकाशन की जानकारी मिलती है।

अनुपमा कुमारी

शोधार्थी, जनसंचार विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

ईमेल-

log2anupama@gmail.com

भूमिका

वर्षों से दबी आकांक्षाओं को स्वर देने की कोशिश में आदिवासी और देशज समाज अपनी भाषाओं में तरह-तरह के समाचार पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन और विविध विषयों पर पुस्तकों को छापने के अभियान में लगा हुआ है, जो बेहद रोचक, प्रेरक और तमाम कठिनाइयों में राह तलाशने का परिचायक है। इसका एक साफ असर यह दिखने लगा है कि सुदूर इलाके से और हाशिये के समाज से भी लेखकों की एक फौज उभरकर सामने आ रही है, जिनकी पहचान भी अपने समुदाय और समाज मैं तेजी से बन रही है। इस प्रक्रिया में सबसे अहम बात यह है कि तमाम आर्थिक मुश्किलों के बावजूद देशज समाज के लोग अपनी कथा, कहानी, साहित्य और ज्ञान-विमर्श को अपने समुदाय के लोगों तक पहुंचाने के लिए हर स्तर पर चुनौतियों का मुक़ाबला कर रहे हैं और उससे निपटने की राह भी तलाश रहे हैं।

शोध प्रविधि

अंतर्वस्तु विश्लेषण व साक्षात्कार

विषय प्रवेश, विस्तार और अध्ययन

डॉ.बीपी केशरी की उम्र 70 पार कर चुकी है। झारखंड की राजधानी रांची से करीब 25-30 किलोमीटर दूर पिठोरिया नामक बस्ती में रहते हैं। रांची विश्वविद्यालय के चर्चित प्राध्यापकों में रहे हैं। अपने गांव पर ही 'नागपुरी संस्थान' चलाते हैं। संस्थान के सौजन्य से अब तक झारखंड की भाषा-साहित्य-संस्कृति- इतिहास-समाज से संबंधित 13 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ.केशरी अक्सर रांची में दिखते रहते हैं। अधिकांश बार किन्हीं आयोजनों में। आयोजन-प्रयोजन न हो तो भी अपनी उम्र से मुठभेड़ करते हुए अपने गांव से ऑटो-बस वगैरह से सफर तय कर सिर्फ बतकही करने भी रांची पहुंचते रहते हैं। डॉ.केशरी पिछले कुछ माह से रांची में कम दिख रहे हैं। खैरियत जानने के बहाने फोन की तो उन्होंने बताया कि तबीयत, स्वास्थ्य सब दुरुस्त है, बस पिछले कई सालों से लगे एक अभियान को अब मुकम्मल मुकाम तक पहुंचाने में लगा हुआ हूं, इसीलिए ज्यादातर समय नागपुरी संस्थान के कमरे में गुजार रहा हूं। डॉ.केशरी का यह अभियान कोई मामूली अभियान नहीं है। उन्होंने नागपुरी भाषा के करीब 700 कवियों द्वारा रचित 35 हजार गीतों का संकलन कर लिया है। 16वीं सदी से लेकर अब तक के सक्रिय कवियों तक का। उन कवियों में 270 लोगों के बारे में संक्षिप्त जीवनी भी तैयार की है उन्होंने। अब उसे ही पुस्तक रूप में लाने की आखिरी तैयारी में व्यस्त हैं। बकौल डॉ.केशरी, बहुत मेहनत करनी पड़ी इसमें, अब इसे प्रकाशित करवाने में आर्थिक मुश्किल समेत और भी कई पेंच-परेशानियां सर पर हैं, लेकिन ऊर्जा इसलिए बनी हुई है कि यह काम होगा या ऐसे काम होंगे तो देशज समाज के वाशिंदे अपने इतिहास और वर्तमान को जानेंगे, उस पर गर्व करेंगे, अपने भविष्य की दिशा तय कर सकेंगे।

नागपुरी झारखंड के छोटानागपुर इलाके में भी सिर्फ एक खास हिस्से की भाषा है। एक छोटे से हिस्से में बोली जानेवाली भाषा में डॉ.केशरी इतने श्रमसाध्य अभियान को मुकम्मल मुकाम तक पहुंचाने में लगे हुए हैं। अपनी भाषा, संस्कृति, साहित्य समाज को लेकर ऐसे ही अभियान पूरे झारखंड में चल रहे हैं। झारखंडी और आदिवासी लोकभाषाओं में कई लोग अपने-अपने तरीके से ऐसे छोटे-बड़े अभियान पिछले कुछ सालों से चला रहे हैं। सिर्फ चला भर नहीं रहे, बल्कि तमाम मुश्किलों के बावजूद अपने अभियान को पहचान दिलाने, एक मुकाम तक पहुंचाने में भी लगे हुए हैं। यह अभियान देशज, आदिवासी और लोकभाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ ही समय-समाज-संस्कृति और इतिहास-वर्तमान को समेटते हुए किताबों को प्रकाशित करने-करवाने तक का है।

इस बाबत जानकारी जुटाने पर हर क्षेत्र में सकारात्मक कोशिशों की बात सामने आती है। प्रमुख आदिवासी भाषा संथाली में ही चांदो मामो, चेचिक, देबान तेनगुन, दिशोम बेउरा, फागुन, हेंदे अरसी, जिवी, मानभूम संवाद, मार्सल ताबोन, रापज सावंत बेवरा, संदेश सकम, सिली, द संघायनी, तोरी सुतम जैसी दर्जन भर से अधिक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की जानकारी मिलती है। वीरेंद्र कुमार महतो जैसे नौजवान इस अभियान में लगे हुए मिलते हैं, जो 'गोतिया' नाम से त्रैमासिक पत्रिका के साथ 'छोटानागपुर एक्सप्रेस' नाम से पाक्षिक अखबार भी प्रकाशित कर रहे हैं। बोकारो में रहनेवाले निमाई चंद महतो से बात होती है, जो खोरठा भाषा में 'लुआठी' नाम से पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। महतो कहते हैं कि हमारे यहां बातों को सहेजने की मौखिक परंपरा रही है, इसलिए स्थानीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशित होने से लोगों की रुचि बढ़ी है। वीरेंद्र कुमार सोय से बात होती है, जो मुंडारी आदिवासी भाषा में 'कुपुल' नाम से चार पन्ने की एक पत्रिका निकालकर पाठकों के बीच पहुंचाना चाह रहे हैं और साथ ही 'संगोम' नाम से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं। 'सेंगा सेतेंग नाम से मुंडारी भाषा की पत्रिका की जानकारी भी मिलती है।

इस कड़ी में एक बेहद महत्वपूर्ण अभियान वंदना टेटे और अश्विनी कुमार पंकज का है। दोनों मिलकर एक साथ आदिवासी भाषाओं में कई लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन कर रहे हैं। साथ ही विभिन्न आदिवासी भाषाओं में वैसे लेखकों के किताबों को प्रकाशित करने के अभियान में लगे हुए हैं, जिन भाषाओं को और जिन लेखकों को मुख्यधारा में कहीं कोई ठौर नहीं मिलता। कुल मिलाकर अब तक तीस किताबों का प्रकाशन ये कर चुके हैं। सिर्फ किताबें छापते नहीं, बल्कि अथक परिश्रम से एक नेटवर्क खड़ा कर उसके वितरण और बिक्री के भी इंतजाम में लगे हुए हैं, जिसमें धीरे-धीरे ही सही, सफलता मिल रही है। वंदना पिछले कई सालों से त्रैमासिक पत्रिका अखड़ा का प्रकाशन कर रही है, जिसकी पहुंच अब झारखंड के अलावा छत्तीसगढ़, उड़िसा, असम, पश्चिम बंगाल समेत उन तमाम इलाकों में हैं, जहां सामान्य और बौद्धिक आदिवासियों की बसाहट है। वंदना साथ में सोरी नानीन नाम से खड़िया पत्रिका भी निकाल रही हैं। वंदना की पत्रिकाएं साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषाई और सामुदायिक अस्मिता के इर्द-गिर्द है, उनके पति अश्विनी कुमार पंकज तो स्थानीय और आदिवासी भाषाओं में एक अखबार 'जोहार दिशुम खबर' के साथ ही समसामयिक व मनोरंजन के मिश्रण वाली पत्रिका 'जोहार सहिया' का प्रकाशन कर रहे हैं, जो स्थानीय भाषाओं में ही मोबाइल इंटरटेनमेंट से फिलिम-सिलिम समेत तमाम समसामयिक हलचलों पर बात करता है। इस पत्रिका में दुनिया के क्लासिक रचनाओं का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद भी नियमित तौर प्रकाशित होता है, जिसके लिए 'दुनिया आपन भासा में' जैसा कॉलम निर्धारित है। जोहार दिशुम खबर बहुभाषी पाक्षिक अखबार है, जिसमें पंचपरगनिया, खोरठा, कुरमाली, नागपुरी, हो, मुंडारी, संथाली, खड़िया, कुड़ुख, बिरहोरी, असुरी, मालतो भाषाओं में खबरें प्रकाशित होती हैं।

जोहार सहिया पत्रिका और जोहार दिशुम खबर के संपादक अश्विनी कहते हैं कि झारखंड बनने के बाद से ही हमलोगों ने यहां की भाषा, संस्कृति, साहित्य को एक स्वर देने के लिए मंच तैयार करने की कोशिश की, जिसके तले इन पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन कर रहे हैं। औपनिवेशिक शासक हमेशा ही अभिव्यक्ति के स्वरूप को पीछे धकेलने की कोशिश में लगे रहते हैं। अकादमिक पक्ष ने भी इस मामले में लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य को अलग कर देशज स्वर की गरिमा को कम करने का प्रयास किया है। जिन चीजों को खत्म करना हो, उसे विशिष्ट बनाकर-बताकर आत्ममुग्धता की ओर मोड़ा जाता है। आदिवासी भाषाओं के साथ भी ऐसा ही हुआ, इसीलिए यह कोशिश की गई।

अश्विनी जिन बातों को बता रहे होते हैं, वह बहुत हद तक उचित भी है। आदिवासी समुदाय की यह शिकायत और पीड़ा और इन दोनों के मिलान से मुख्यधारा की रचनाधर्मी दुनिया के प्रति एक हद तक नाराजगी का भाव इस आधार पर रहा है कि उस समाज को सांस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास में वह स्थान या महत्व नहीं दिया जा सका, जिसके वे असली में हकदार थे, जबकि अतीत से लेकर वर्तमान तक वे तमाम मुश्किलों के बीच स्वर्णिम इतिहास गढ़ते रहे हैं। इस नजरिए से देखें तो एक तरीके से आदिवासी, क्षेत्रीय व देशज भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से लेकर पुस्तक प्रकाशन की प्रक्रिया वर्षों से और पीढ़ियों से दबी और दबाई गई आकांक्षा के स्वर के उभार की प्रक्रिया ही है। इसी कड़ी में जनमाध्यम नामक संस्था भी आदिवासी भाषाओं में तरह-तरह के प्रयोग से पुस्तकें व अन्य सामग्री लाने की कोशिश में है। जनमाध्यम की ओर से अब तक 23 किताबें प्रकाशित हुई हैं, जिसके जरिये सनिका मुंडा, डोमरो बिरूली, उदयचंद्र बोदरा, लोकेंद्र देवगम, रमेश हेंब्रम जैसे विविध आदिवासी भाषाओं के लेखकों का उभार हुआ है। सनिका मुंडा कहते हैं कि ऐसे लेखन का हमारे समुदाय के लिए बेहद महत्व है, क्योंकि इससे सीधे तौर गांव-घर के लोग जुड़ते हैं। जनमाध्यम के सचिव फैसल अनुराग बताते हैं कि हुलगुलान रेन बार शहीद, कोल्हान दिसुम होड़ दुरंग, हासा सकम आदि किताबों की मांग चहुंओर बहुत है। बकौल फैसल, इन भाषाओं के अल्फाबेट और कैलेंडर भी प्रकाशित कर लोगों तक पहुंचाए जा रहे हैं। यह सच है कि ऐसे काम हालिया वर्षों में बहुत बढ़े हैं, लेकिन सवाल यह उठता है कि आखिर इन भाषाओं में छप रहे पत्र-पत्रिकाओं या पुस्तकों के सामने आर्थिक मोर्चे से लेकर वितरण-बिक्री तक का जो संकट है, वह तो है ही, एक सवाल यह भी है कि ऐसे प्रकाशनों का संबंधित समाज पर कितनी दूर तक असर पड़ रहा है।

संथाली में साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता भोगला सोरेन कहते हैं कि लोकभाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है, ऐसा तो दावा नहीं कर सकता, लेकिन यदि अस्मिताओं को बचाए रखना है तो अपनी अपनी भाषाओं में रचना कार्य निरंतर करते रहना होगा। आदिवासी भाषाओं में तो यह और जरूरी है, क्योंकि कई आदिवासी भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं, कई विलुप्ति के कगार पर हैं, निरंतर रचनाधर्मिता इन्हें बचाने में मददगार साबित होंगी। भरत भूषण अग्रवाल सम्मान से सम्मानित चर्चित युवा कवि अनुज लुगुन का मानना है कि आदिवासी भाषाओं में रचना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि हिंदी भाषाओं में रचित आदिवासी विषय पर साहित्य और लेखन का बर्ताव हम देखते रहे हैं। हालांकि संथाल की चर्चित कवियत्री निर्मला पुतुल कुछ इतर विचार रखती हैं। वह तहलका से बातचीत में कहती हैं कि स्थानीय भाषाओं में लेखन और प्रकाशन तो ठीक है, लेकिन इसका दायरा मुट्ठी भर लोगों तक का है। और यदि वह ओलचिकी जैसे स्थानीय लिपि में लिखी जा रही हो तो दायरा और सिमट जाता है, ऐसे में यह जरूरी है कि इसका अनुवाद भी देवनागरी ओर दूसरी अन्य भाषाओं में होते रहना चाहिए, ताकि दायरा बढ़ सके। निर्मला कहती हैं कि अपनी भाषा में लिखनेवाले आत्ममुग्धता के शिकार होते जा रहे हैं और अधिकांश सिर्फ गीत, कहानी, उपन्यास, सौंदर्यबोध में ही फंस गए हैं, जबकि समस्याओं, कुरीतियों आदि पर ज्यादा लिखा जाना चाहिए। इन सबके बीच रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय भाषा विभाग के पूर्व अध्यक्ष गिरीधारी राम गौंझू कहते हैं कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देशज भाषा में लिखनेवाले लोग लगातार बेहतरी की कोशिश में लगे हुए हैं, जिससे नई चीजें सामने आ रही हैं और लोगों को समझने का मौका मिल रहा है।

संभावना, विडंबना और निष्कर्ष

हालांकि ऐसे तमाम संभावनाओं-विडंबनाओं के बीच कुछेक यह भी कहते हैं कि स्थानीय भाषाओं में इतनी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के उभार की कहानी के पीछे बड़े हिस्से का मकसद सरकार से विज्ञापन प्राप्त कर अपना रोजगार प्राप्त करना है। यह तर्क सही नहीं लगता, क्योंकि सरकार से इन पत्रिकाओं को इतना विज्ञापन नहीं मिलता, जिससे साल भर एक रोजगार की जरूरत को पूरा किया जा सके और यदि यह मान भी लें कि ऐसे अभियान से प्रकाशक औसतन तीन-चार हजार रुपये मासिक आमदनी भी कर लेते होंगे तो यह बेहतर नजरिये से ही देखा जाना चाहिए। आखिर इस बहाने ही सही, वर्षों से दबी बड़ी जमात के आकांक्षा के स्वर का उभार हो रहा है और तथ्यों को मौखिक तौर पर ही इतिहास को सहेजकर रखने की परंपरा अब छपकर सदा-सदा के लिए संकलित हो रही हैं। कई नए लेखक तैयार हो रहे हैं, जो लेखक थे, वे छपकर सामने आ रहे हैं। वैसे झारखंड जैसे राज्य में इन क्षेत्रीय व आदिवासी भाषाओं में विज्ञापन पाकर एक रोजगार की तरह खड़ा कर लेना बातों को भी पूरी तरह सच नहीं माना जा सकता। जैसा कि एक उदाहरण बहुभाषाई रंगीन अखबार जोहार दिशुम खबर का है। इस पत्र को केंद्र में डीएवीपी से तो एप्रूवल मिल चुका है, लेकिन अब भी वे राज्य में लिस्टेड करवाने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं, सफलता नहीं मिल रही। जोहार दिशुम की तरह कई पत्र-पत्रिकाओं का संघर्ष जारी है, लेकिन शुकुन देनेवाली और उम्मीद की किरण यही है कि देशज भाषा के नए रचनाकारों मे ऊर्जा है। अपनी मातृभाषा मे लिखने के प्रति एक ललक है और पहचान को लेकर गर्व का भाव भी।

संदर्भ

- पंकज ए.के, जोहार दिसुम खबर (बहुभाषाई समाचार पत्र), प्रकाशन- रांची
- झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा- त्रैमासिक पत्रिका, प्रकाशन- रांची, संपादक- वंदना टेटे
- नागपुरी संस्थान स्मारिका, प्रकाशन- नागपुरी संस्थान, पीठोरिया, रांची, संपादक- बीपी केशरी,
- आदिवासी साहित्य: परंपरा और प्रयोजन' वंदना टेटे, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची, 2013, पृष्ठ-84
- आदिवासी साहित्य विमर्श, संपादक- गंगा सहाय मीणा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2014

ROLE OF BUDDHIST BHIKKHUS IN SOCIETY

शोध

Buddhist *Bhikkhus* role are very important in society to create a *praBuddha Bharat* and we saw this also, that, if we could not have created a *praBuddha Bharat* hitherto, *Bhikkhus* are responsible for that. Because.....

Sandip T. Kamble

Ph.D. Scholar

Centre for Buddhist Studies

Central University of Hyderabad

sandipkamblebudha@gmail.com

ABSTRACT

It is very important to know that what *Buddha* said to his first five disciples when he turned the wheel of *Dhamma*. *Buddha* said, "Go Ye, O, *Bhikkhus*, and wander forth for the gain of many, for the welfare of many, in compassion for the world. And, *Buddha* himself and his *Bhikkhus sangha* did that, and so, they could created Buddhist India, There are evidences in the history that 90% people were followers of Buddhism in *Ashoka* period. But now question arise that what are we looking today? What is the position of *Buddhism* today? Today we are looking that most of the *Bhikkhus* are engaged in meditation like *Hindu* saints, most of the *Bhikkhus* vest their time only in *Vihars* without reading Buddhist literatures. *Bhikkhus* are not wandering in society to preach and teach *Buddha's Dhamma* to people, And so, whatever is the condition of *Buddhism* today, no doubt, Buddhist *Bhikkhus* are responsible for that, *Dr. Ambedkar* expressed his views about this in his *'Rangoon* speech on' *Buddha* and Future of His Religion.

KEYWORDS:

Bhikkhus, Buddhism, Dhamma, Sangha vedic verna system, discrimination, uprooted revolution, propagation, equality, liberty, fraternity, justice, morality, *vihar*, embrace, expectation, *PraBuddha Bharat*.

INTRODUCTION:

When we think about Buddhist *Bhikkhus* in Buddhism then many questions arise in our mind, such as, what was the purpose for which the *Buddha* thought of establishing the *Bhikkhus Sangha?* What was the necessity

for creating a separate society of *Bhikkhus?*[1] What expectation was to *Buddha* & Dr.B.R *Ambedkar* from *Bhikkhus*? Like this, many several questions arise in our mind. When we think about the *Bhikkhus* role in Society. It is very important & necessary to know that when *Buddha* first time turns the wheel of *Dhamma* after enlightenment in *Deer park* of *Sarnath* before his first five disciples, *Vappa, Bhadiya, Mahanam, Ashvaiit & Kondilay*, the *Buddha* addressed them following;

"Go Ye, O *Bhikkhus*, and, wander forth for the gain of many, for the welfare of many, in compassion for the world…[2]

What does it show? It shows that *Buddha* & his *Sangha* only preached & taught *Dhamma* to all kinds of people in country & across country. *Buddha's Dhamma* was on reason & morality, it is scientific *Dhamma*. That is why *Buddha* rooted out the *VedicVarna* system, castism, superstitions, discrimination, and many other evils of *Vedic Dharma*. There was not challenged to *Buddha'*s scientific *Dhamma*. That is why *Buddha* changed the philosophy of the world which was against the human being welfare, and established the new human being welfare, scientific philosophy which was on the base of four golden principles, Justice, Equality, Liberty and Fraternity.

What had the upshot of *Buddha*'s revolution? People attracted toward the *Buddha*'s *Dhamma* and all walks of life people embraced Buddhism.

What had been the second upshot of *Buddha'*s revolution? Science began to develop, and, world greatest universities *Nalanda & Takshashila* was established, scholars from the each corner of the world were coming to take education there.

What was the third upshot of *Buddha*'s revolution? The so called *Shudras*, untouchables, women, had free from Vedic slavery and Varna system, because *Buddha* and his *Sangha* destroyed it. That is why *Maurya* kingdom was established, and, many kings like *Ashoka, Chandragupta* , *Brihadrath* became kings. It was the upshot of *Buddha* and his *sangha*'s social revolution. It was one of the greatest revolutions of the world.

From *Buddha*'s revolution, we can understand the importance and necessity of *Bhikkhus Sangha* and their role in Buddhism but this all happened due to *Buddha* and his honest,dedicated intellectual

hardworking *Bhikkhus Sangha*.That is why Dr. *Ambedkar* said while delivering a speech on '*Buddha* and Future of His Religion'.As is well known the Universiies of *Nalanda* and *Taxila* were run and managed by *Bhikkhus.* Evidently they have been very learned men and knew that social service was essential for the propagation of their faith. The *Bhikkhus* of today must return to the old ideal.[3]

Now questions arise about the Indian *Bhikkhus* role in Buddhism after the *Maha parinibbana* of *Buddha.* Many questions arise, such as,

Do the *Bhikkhus* follow *Vinaypitkas*? Do they behave according to *Vinaypitkas* rules made for them by *Buddha* himself? Today also there is discrimination in society on the basis casts and genders, are the *Bhikkhus* making efforts to destroy it by preaching and teaching the *Buddha's Dhamma?* Morality is a center of Buddhism, but today, it is disappearing from society, are the *Bhikkhus* making efforts to establish morality in society by preaching and teaching the *Buddha's Dhamma*? Today also Indian society divided into six thousands or above casts, are Buddhist *Bhikkhus* performing their role honestly to root out the casts and make *Bahujan Samaj*?

Today also, there are several evils in society, are the Buddhist *Bhikkhus* making an effort to uproot it by preaching and teaching *Buddhas Dhamma*? I think, we can raise several questions on the role of Buddhist *Bhikkhus* in society, but the answer will be negative, to this all questions, why this all happening?

Because, in *Buddha*'s period *Bhikkhus* were only preaching and teaching the *Dhamma* in all directions and till the all walks of life people. They were only staying in *Vihar* in rainy season, and in that time, they were doing research on different issues, but everything is opposite of that now. Buddhist *Bhikkhus* only stay at *Vihar*. They don't go anywhere to preach and teach *Buddha's Dhamma.*

They do not study and research on burning issues of society, they only do meditation, that is why Dr. *Ambedkar* said that what was the object of Buddha in creating the *Bhikkhus*? Or was his object to create a perfect man? Or was his object to create a social servant devoting his life to service of the people, and being their friend, guide and philosopher?

Or not so, which expectation was to *Buddha* and Dr. B. R. *Ambedkar* from them? That is why

while delivering a speech on *"Buddha* and the future of his religion in India" *Rangoon*, the capital of *Burma* in 1954, Dr.B.R *Ambedkar* asked about Indian *Bhikkhus* that, are *the Bhikkhus Sangha* today living up to these ideals? The answer is emphatically in the negative, it neither guides the people nor does it serve them."[5]

Like this many times, Dr.B.R *Ambedkar* expressed his thoughts about Buddhist *Bhikkhus* role in Society. While delivering speech on *Buddha Or Karl Marx* Dr.*Ambedkar* says the eight articals were only permitted to *Bhikkhus* those were : three robes or pieces of cloth for daily wear,a girdle for the loins, an alms- bowl, a razor, a needle,a water strainer.6 Why ? Because *, Buddha* wanted to forbide the *Bhikkhus Sangha* from acquiring property,*Buddha* wanted that his *Bhikkhus* should work in the interest of society,his *Bhikkhus* could have created an ideal society,people should imitate his *Bhikkkus Sangha* as an ideal *Bhikkhus Sangha*. But what today we see *Bhikkhus* are not following the rules and regulations of *Vinaypitakas.*They are not following the teaching of *Buddha.* And this the fact,it mean I don't want to criticize anyone .One who follow the teaching of *Buddha* and His *Dhamma* I salute them from the bottom of my heart. Due to, I am writing an article I cannot go into detail. But, I would like to give you an example, which is very important. While Dr. B.R *Ambedkar* embracing Buddhism in *Nagpur* on 14th October 1956, by U *Chandramani,* Dr *Ambedkar* showed his reluctance about taking refuse in *Sangha.* While describing about this writer *Gail Omwedt* writes in her 'Buddhism in India' that when *Ambedkar* proclaimed his refuge in the *Buddha*, the *Dhamma,* and the *Sangha,* took the vows from U. *Chandramani* a Burmes who was the oldest *Bhikku* in India some of those who were afraid because of his reluctance about taking refuse in the *Sangha* gave a sigh of relief.[7]

Why this happened, Dr.B.R. *Ambedkar* wanted to insult the present *Bhikkhus Sangha*? No, Dr.B.R *Ambedkar* wanted to create *praBuddha Bharat* and so he wanted the ideal, perfect, dedicated, intellectual, hardworking, Buddhist *Bhikkhus* and so he wanted an improvement in the present Buddhist *Bhikkhus Sangha*. Not only Dr.*Ambedkar* stoped here while telling about improvement in present *Bhikkhus Sangha* but also when he added the point no.8 in the constitution of 'The Buddhist Society of India', 'To create a new order of priests, if it become necessary to do so'8

Why, because, Dr, *Ambedkar* wanted to make *praBuddha Bharat* (Enlightened India) and in that

direction Dr. *Ambedkar* gave *Dhamma Deeksha* to eight *lack* people, in *Nagpur* over five *lack* people and in *Chandrapur* around three lack people embraced Buddhism on 14th, 15th and 16th October 1956.[9] Now the question arise that after 1956 how many people converted in Buddhism by Buddhist *Bhikkhus*? Are they performing their role to fulfill the dream of Dr. *Ambedkar* to make *PraBuddha Bharat* as Bhuddist *Bhikkhus?*

I am sure the answer will be negative. But while writing about the role of Bhuddist *Bhikkhus* in society. My purpose is not to criticize the Buddhist *Bhikkhus*. My purpose is that, our Buddhist *Bhikkhus* should be ideal to the world and they should perform their role to fulfill the dream of *Buddha* and Dr. B.R *Ambedkar* to create *a PraBuddha Bharat*. And so in views of the above'Ambedkarian Enlightenment' of the Modern *Buddha-Babasaheb,'Buddha* and His *Dhamma* ' is a path which must be pursued, not only by the Indian but by the whole humanity.Only'Ambedkarian Enlightenment' can lead to an 'Enlighteened India ' and 'Enlightned World.'10

CONCLUSION:

We saw in the present research article role of Buddhist *Bhikkhus* in society, that Buddhist *Bhikkhus* role are very important in society to create a *praBuddha Bharat* and we saw this also, that, if we could not have created a *praBuddha Bharat* hitherto*, Bhikkhus* are responsible for that. Because, *Bhikkhus* did not follow the ideals which *Buddha* himself established for *Bhikkhus Sangha*. Why did *Buddha* establish a separate *Bhikkhus Sangha*? Why did Buddha made separate rules and regulation for *Bhikkhus Sangha* in *Vinaypitkas?* Because, if the *Bhikkhus sangha* will be ideal for society, society will follow them, and society will also be an ideal society. But, what we see, neigher *Bhikkhus Sangha* followed the teaching of *Buddha* of *Vinaypitakas* nor they told to society. All of we know that morality is the centre of *Buddha's Dhamma*. *Bhikkhus* could not have established society on complete morality foundation. Again all of we know that our country is divided into more than 6000/- [Six Thousand castes] But *Buddha's Dhamma* teaching is on the four golden principals equality, liberty, fraternity and justice. *Bhikkhus Sangha* could have create an ideal society without any caste with the teaching of equality, liberty, fraternity and justice, but *Bhikkhus* failed to do this. Now question arise here that why did *Bhikkhus* fail to do this? Because, *Bhikkhus* did not reach to all people. They could neither

preached *Buddha's Dhamma* to each and every corner of the country nor taught to all kind of people. Buddhist *Bhikkhus* life limited only to Buddhist people, And so, other people say, they are Buddhist *Bhikkhus,* they are not ours. Why did this happen? Because, *Bhikkhus* failed to preach and teach *Buddha's Dhamma* to all human beings, welfare humanity teaching to all kinds of people. *Bhikkhus* failed to preach and teach equality, liberty, fraternity and justice, teaching of *Buddha* to all kinds of people. At last I would like to say, that it is our duty to create equality, liberty, fraternity and justice in society. Because, until and unless we could not build up the society on these four golden principles of Buddhism we cannot create *PraBuddha Bharat*. When we will success to establish India on these four golden principles there will not any caste. And the country without caste will be Enlightened India.

Reference Books

1. *Ambedkar* Writing and Speeches, Vol. 17 Higher Education Department Government of *Maharashtra* 2003. P. 106
2. *Omvedt Gail*, Buddhism in India, Sage Publication India pvt.ltd P.64
3. *Ambedkar* Writing and Speeches, Vol. 17 Higher Education Department Government of *Maharashtra* 2003 .P. 107
4. *Ambedkar* Dr. B.R. , *Buddha* And His *Dhamma* , *Buddha Bhumi* Publication, *Nagpur* 2011. P.7
5. *Ambedkar* Writing and Speeches, Vol.17 Higher Education Department Government of *Maharashtra* 2003 P.107

6.*Ambedkar* '*Buddha Or Karl Marx' Prabuddha Bharat Pustkalya, Napur* 2011 p.no.14

7. *Omvedt Gail*, Buddhism in India Sage, Publication India pvt.ltd P. 261

8. *Ambedkar* Writing and Speeches, vol.no.17 Higher Education Department Government of *Maharashtra* 2003 p.479

9. *Jamanadas* K., The Great Mass Conversion, Blue World Series Publication, *Nagpur* 2013 P. 1

10. Ibid p.no. 8

MERGERS AND ACQUISITIONS REGULATORY FRAMEWORK IN INDIA

RESEARCH

शोध

INTRODUCTION

In the last few years, India had witnessed a substantial slowdown in the mergers and acquisitions ("M&A") activity. In the year 2014, Indian companies were involved in transactions worth $ 33 billion whereas in the year 2015, the value of M&A activity saw a dip to $ 20 billion.

- The term 'merger' is not defined under the Companies Act, 1956, and under Income Tax Act, 1961. However, the Companies Act, 2013 without strictly defining the term explains the concept.
- The Income Tax Act, 1961 does defines the analogous term 'amalgamation': the merger of one or more companies with another company, or the merger of two or more companies to form one company.
- This document shall use amalagamation and/or M & A words interchangably henceforth.
- The Company Act 1956 (Sections 390 to 394) and Company Act 2013 (Sections 230 to 234), deal with the schemes of arrangement or compromise between a company, its shareholders and/or its creditors.
- Diagram#1 provides an chart of Indian regulatory System.

Rakesh Kumar

Assistant Professor

Law Centre II, Faculty of law, University of Delhi

Diagram #1

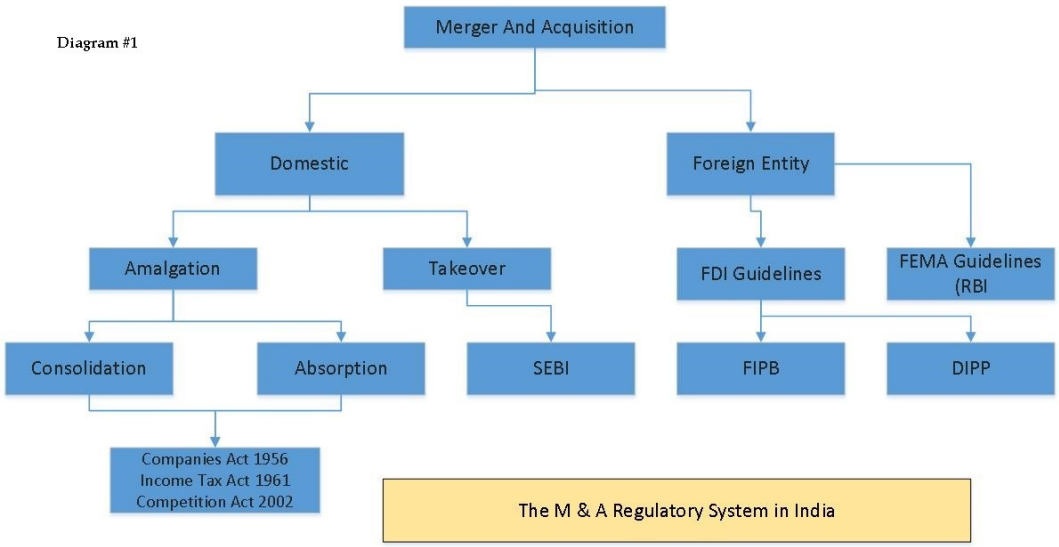

The Companies Act Provisions - 1956

- A typical merger in indian involves the High Court of the concerned jurisdiction as merger in India is a High Court-driven process.
- Diagram #4 provide quick workflow of M & A in the India.
- Sections 390-394 of Chapter V of Company Act 1956 and under Company Act 2013, the sections 230234 governs the merger of two or more companies in India.
- These provisions of the aforesaid sections regulate all types of the restructing associated with companies formed under The Companies Act (whether in India or outside India).
- The Companies Act provides that the transferor company, which is the target company, can be an Indian company or a company incorporated outside India.
- Diagram#4 shows flowchart/process of M & A in India.

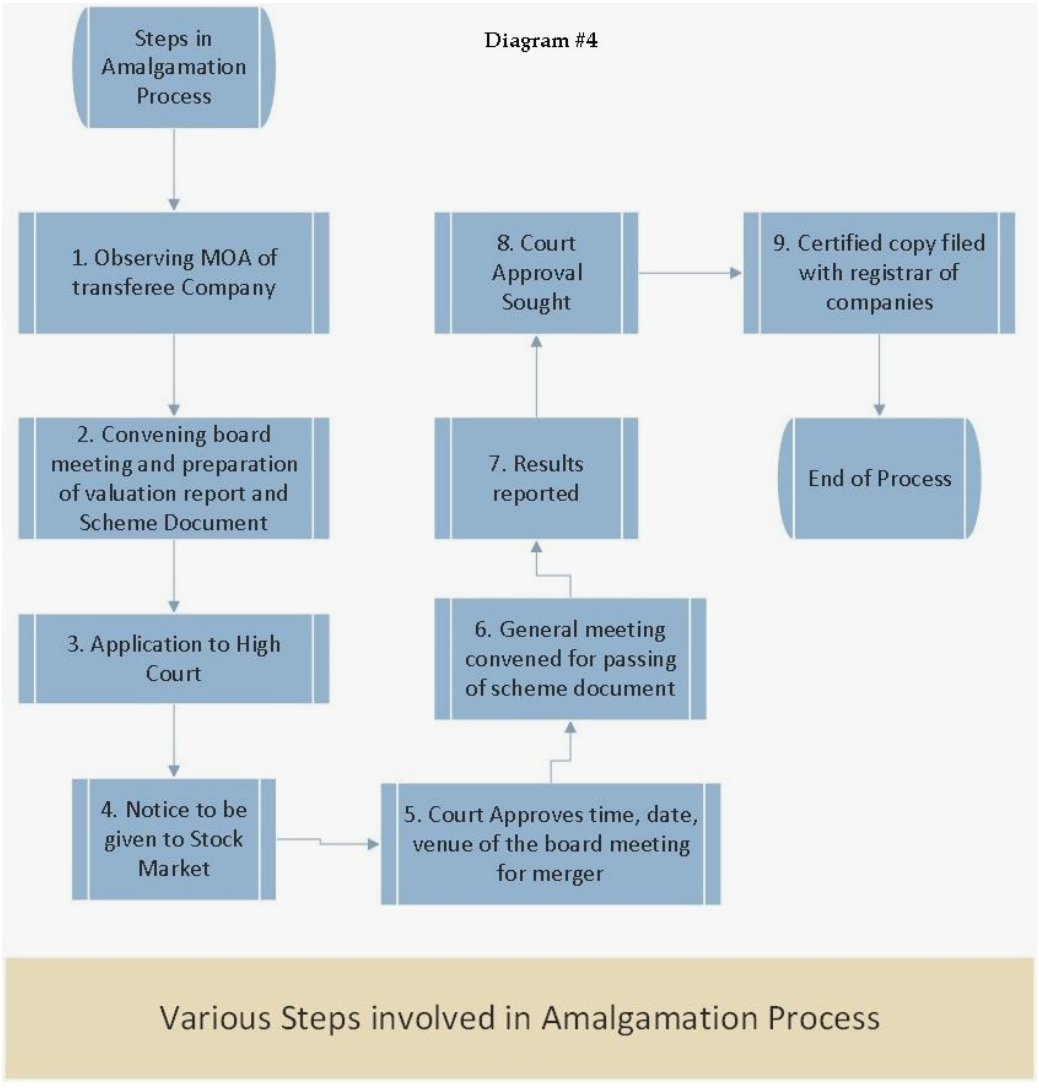

The schema of amalgamation is expected to consist of :

1. The particulars about the transferor (target) and the transferee(acquirer)
2. Main terms and conditions for transfer of assets and liabilities from the transferor to the transferee.

3. The proposed date for the scheme.
4. Share capital of the transferor and the transferee in terms of authorized capital, issued capital , subscribed capital and paid up capital.
5. The proposed payment in terms of cash component and exchange ratio for target shareholders. In context of exchange ratio, the target shares are extinguished and new shares are issued.
6. The proposed conditions pertainining to dividend distribution, ranking of equity, etc.
7. The proposed conditions pertaining to provident fund, gratuity, super annuity funds of the employee of the transferor company etc.

The Income Tax Act Provisions (ITA) - 1961

- Section 45 of ITA levies tax on the capital gain on transfer of Capital assets.
- Section 47 or ITA exempts capital gain for merger under section 47(vi) for amalgamating companies.
- To be tax neutral, amalmagation should qualify the definition provided in ITA .
- Section 47 (via) describes tax details when acquiring company involved is Foreign – and regulation states that
    1. 25% of the shareholders of amalgamating foreign company continue to remain shareholders of the amalgamated foreign Company.
    2. Such a transfer is not subject to any tax on capital gain in the country where the amalgamated company is incorporated.
- Section 72A of ITA states that when non-performing company is acquired by performing company, amalgamated company formed can avail the benefit of carrying forward the loss and the unabsorbed depreciation of the amalgamating company when it fulfill following conditions-
    1. Accumulated losses remain unabsorbed for 3 or more years.
    2. 75% of book value to be held at least for 3 or more years.
    3. Amalgamated company continues the business of the amalgamating company for not less than 5 years from the date of amalgamation.
    4. Amalgamated company holds at least 75% of fixed assets (in book value) of the amalgamating continue for 5 years.
    5. The amalgamated company is an Indian company.
- Short term tax gain is taxed at 15%, while long term capital gain is exempted if securities transfer tax (STT) – 0.1% of transaction value is already paid.
- Companies undergoing merger, if they fulfill the criteria laid down in section 2(1B) and 72A of ITA, then are exempted from any Tax Gain.

Competition Act (CA) Provisions - 2002

- The CA regulates anti-competitive agreements, abuse of dominant position in the market, and consolidation leading to monopoly creation.
- Any agreement between companies regarding activities related to procurement, production, distribution of goods and services, acquisition or control of knowledge and information which creates monopoly, has adverse impact on competition (AAEC) in indian market.

- Combination as per the act means
  1. The acquisition of control, shares, or voting rights or assests by an acquirer or an enterprise.
  2. The acquisition, merger and amalgamation among the enterprises.
  3. Acquiring of control by a person over an enterprise when such a person has already direct or indirect control over another entreprise engaged in production, distribution, or trading of a similar or identical or substitutable goods or provision of a similar or identical or substitutable service.
- These combinations are subject to financial threasholds as state by the Act.

Cross Border M & A

- In case a foreign Entity is involved, then the merger or acquisition is also regulated by Foreign Exchange Management Act 1999 (FEMA) which is governed by RBI.
- A foreign entity can invest in India through FDI route or FPI route.
- FDI route is equity in the Indian company – which is long term investment.
- FPI route short-term investment in securities listed on Indian Stock Exchange
- Diagram#2 shows modes of foreign investment in India

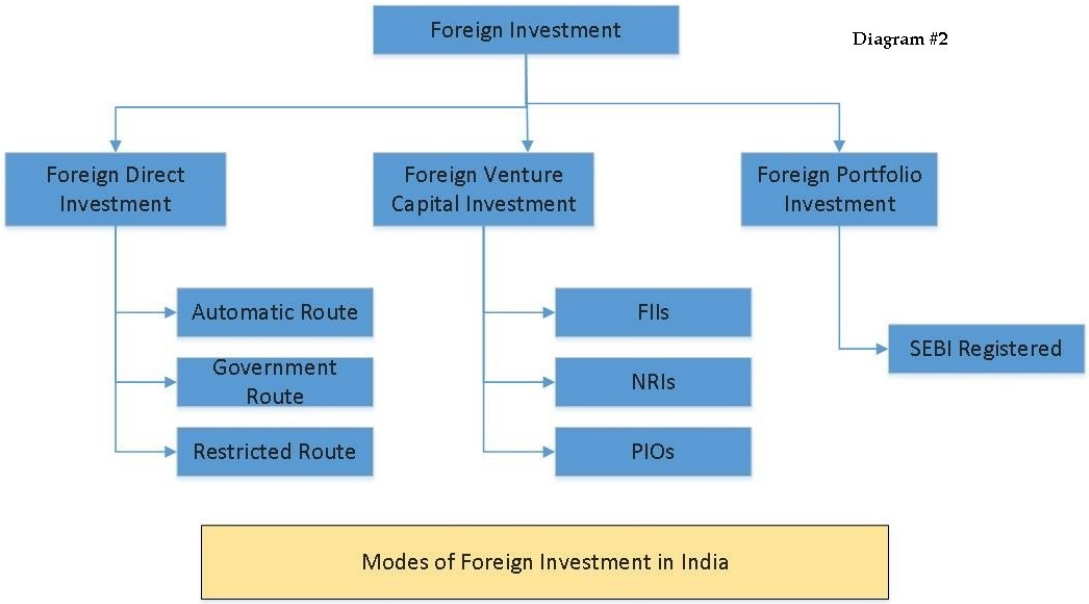

- FDI can bew done by a foreign entiry in the form of wholly owned subsidiary formed in India Under the Companies Act 1956 or as joint venture firm.
- Foreign company can also set up a liasion office, project office or a branch office to carry activities permitted under FEMA regulation.
- FDI allowed by Indian government in Indian by the foreign companies and entities falls under follows categories highlighted by Diagram #2
    1. Automatic Route of Investment - Such those sectors permitted by Government e.g. Insurance upto 26% or Clean Energy.
    2. Restricted Investment – Such as Defense Equipment, Electronic or Print Media or Broadcasting as well as MSME sector products.
    3. Prohibited Investment – Such as Atomic Energy, Rail Transport, Lottery Business, Housing or real Estates, TDRs or Multi Brand Retail Trading etc

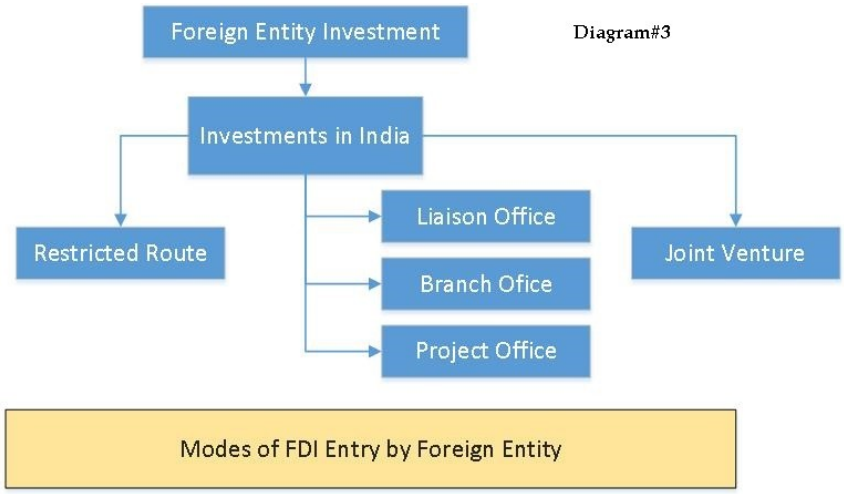

Diagram#3

- FPI (Foreign Portfolio Investment) is done through FIIs. This is regulated by SEBI and FEMA guidelines.
- All FIIs needs to regiser under SEBI (FII) regulation 1995, regulations 5(2) of FEMA Notification no# 20 dated May3,2000.
- All registered FII with SEBI gets blanket approval from RBI.
- FII includes
    1. AMC, Pension Funds, Mutual Funds
    2. Investment Trust, University Funds
    3. Endowment Funds
    4. Charitable Trusts and Societies.
- All Foreign Venture Capital Investors (FVCIs) need to register themselves with SEBI as per SEBI regulations and sector specific Caps of FDIs.
- The registered FVCIs can invest through equity, equity linked and debt instruments through an IPOs or private placements.
- They can also invest in securities on recognized stock exchange.

- FVCIs are regulated by RBI notification circular #93 – in year 2012.

Two examples of M & A (3)

Foreign company acquisition of company setup in India

On 31 August 2016, there was Open offer ("Offer") for acquisition of up to 6,486,000 (Six million four hundred and eighty six thousand) fully paid-up equity shares of face value of INR 10 (each an "Equity Share"), representing 25% (Twenty five percent) of the fully diluted voting share capital of Sharp India Limited ("Target Company") by Sharp Corporation ("Sharp Corporation" / "Acquirer") along with Hon Hai Precision Industry Co., Ltd. ("PAC1" / "Hon Hai"), Foxconn (Far East) Limited ("PAC2" / "FFE"), Foxconn Technology Pte. Ltd ("PAC3" / "FTP") and SIO International Holdings Limited ("PAC4" / "SIO" collectively with Hon Hai, FFE and FTP shall be referred to as the "PAC" / "Allottees").

Here are offere details(4)

1. **Offer Size:** Up to 6,486,000 (Six million four hundred and eighty six thousand) fully paid-up equity shares of face value of INR 10, representing 25% (Twenty-five percent), of the fully diluted voting equity share capital of the Target Company ("Voting Share Capital"), as of the 10th (tenth) working day from the closure of the tendering period.
2. Price / consideration**: INR 53.18 (Indian Rupees Fifty three point one eight)] per Equity Share ("**Offer Price"). The Offer Price has been calculated in accordance with Regulation 8(3) of the SEBI (SAST) Regulations. The Offer Price shall be enhanced by an amount equal to a sum determined at the rate of ten per cent per annum for the period between the date on which the intention or the decision of the Primary Transaction (as defined herein below) was announced in the public domain i.e. 25 February 2016, and the date of the detailed public statement, in compliance with the Regulation 8(12) of SEBI (SAST) Regulations.
3. **Mode of payment (cash / security):** The Offer Price will be paid in cash, in accordance with Regulation 9 (1) (a) of the SEBI (SAST) Regulations.
4. **Type of offer (Triggered offer, voluntary offer / competing offer, etc.):** The Offer is a mandatory offer made by the Acquirer and the PAC in compliance with Regulations 3, 4 and 5(1) of SEBI (SAST) Regulations. The thresholds specified under Regulation 5(2) of the SEBI (SAST) Regulations are not applicable. This Offer is not subject to any minimum level of acceptance.

Indian company acquiring another Indian company

On 24 Feb 2016, there was open Offer for Acquisition of upto 1,57,64,38,113 equity shares of Rs. 2/- each from the **Public Shareholders of Suzlon Energy Limited** ("Target Company") by **Family Investment Pvt. Ltd.** ("Acquirer I"), Quality Investment Pvt. Ltd. ("Acquirer II"), Viditi Investment Pvt. Ltd. ("Acquirer III"), Virtuous Finance Pvt. Ltd. ("Acquirer IV"), Virtuous Share Investments Pvt. Ltd. ("Acquirer V"), Tejaskiran Pharmachem Industries Pvt Ltd ("Acquirer VI"), Sunrise Associates ("Acquirer

VII"), Goldenstar Enterprises ("Acquirer VIII"), Pioneer Resources ("Acquirer IX"), Expert Vision ("Acquirer X"), Aalok D. Shanghvi ("Acquirer XI"), Vibha Shanghvi ("Acquirer XII"), Vidhi D Shanghvi ("Acquirer XIII"), Neostar Developers LLP ("Acquirer XIV"), Real Gold Developers LLP ("Acquirer XV"),

Suraksha Buildwell LLP ("Acquirer XVI"), Sudhir V. Valia ("Acquirer XVII"), Raksha S. Valia ("Acquirer XVIII"), Vijay M. Parekh ("Acquirer XIX") and Paresh M. Parekh ("Acquirer XX") (collectively referred to as "Acquirers") together with the Promoter Group (as defined below) of the Target Company as the persons acting in concert (collectively referred to as "PACs") with the Acquirers.

Here are details of offer.

1. **Offer Size:** Upto 1,57,64,38,113 equity shares of Rs. 2/- each, representing 26% of Emerging Voting Capital (as defined below) of the Target Company.
2. **Offer Price**: The Offer Price is Rs. 18/- (Rupees Eighteen only) per fully paid-up equity share ("Offer Price") aggregating to Rs. 2837,58,86,034/- (Rupees Two Thousand Eight Hundred Thirty Seven Crores Fifty Eight Lacs Eighty Six Thousand and Thirty Four only). The Offer Price is also subject to finalization of the price for the proposed preferential issue of equity shares as on the relevant date, i.e. February 16, 2015.
3. **Mode of Payment:** The Offer Price is payable in cash, in accordance with the provision of regulation 9(1)(a) of the Securities and Exchange Board of India (Substantial Acquisition of Shares and Takeovers) Regulations, 2011 and subsequent amendments thereof("SEBI (SAST) Regulations, 2011").
4. **Type of Offer:** This Offer is a triggered offer made in compliance with regulations 3(2) and 4 of the SEBI (SAST) Regulations, 2011.

Reference :-

(1)-http://www.wileyindia.com/management-textbooks/finance/mergers-and-acquisitions-valuation-leveraged-buyouts-and-financing.html

(2)-http://www.wileyindia.com/management-textbooks/finance/mergers-and-acquisitions-valuation-leveraged-buyouts-and-financing.html

(3)- http://www.sebi.gov.in/sebiweb/home/list/3/20/15/0/Letter-of-Offer

(4)-http://www.sebi.gov.in/sebiweb/home/document_detail.jsp?link=http://www.sebi.gov.in/cms/sebi_data/docfiles/34573_t.html

(5)-http://www.sebi.gov.in/sebiweb/home/document_detail.jsp?link=http://www.sebi.gov.in/cms/sebi_data/docfiles/30355_t.html

लेखनी

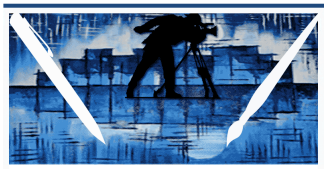

सृजन

स्त्री को
किसीसे प्रेम नहीं करना चाहिए....
'प्रेम'
छीन लेता है
सोचने समझने की
तर्क करने की
विरोध करने की शक्ति....
और बना देता है उसे...
निरा गाय....!!!!!
बिना सींगो वाली...!
और पिता भाई प्रेमी या पति
जिनसे भी वह प्रेम करती है
दोहन करते रहते है उसकी भावनाओं
का...
और उसे लगता है,
वे उससे प्रेम करते है....!

प्रेम स्त्री को अँधा बना देता है
वह देख नहीं पाती पिता भाई प्रेमी या पति
द्वारा किया गया दुत्कार!
वह देख नहीं पाती
जब वे उसे
उसकी भावनाओं
उसकी इच्छाओं का बलिदान करने पर
विवश कर देते है,
अपनी झूठी शान के लिए...!
वह देख नहीं पाती
जब वे उसकी सुरक्षा के नाम पर
छीन लेते है उसकी स्वतंत्रता!!!!
और समय समय पर
पढ़ते है उसके कर्तव्यों की पोथी!!!
और वह भूल जाती है उसके अधिकार
और रटती रहती है,
"पिता उवाच.....
पति उवाच....."
और यही सब देती है विरासत में
और एक स्त्री को!

जब पिता अपना बोझ किसी और पर
डाल देता है...
वह बंध जाती है
किसी और खूँटे पर..
और कोल्हू के बैल की भांति
पूरा जोर लगाकर
गोल-गोल घुमती रहती है
उसके(?) संसार के चारों ओर
सुबह से रात तक..
और
रात से फिर सुबह तक!!!!!

स्त्री सबसे प्रेम करती है..
पर उसे कोई प्रेम नहीं करता..!
उसके न होने पर
सबकी दिनचर्या
हो जाती है अस्तव्यस्त
फिर क्या..?
उसे एक दिन के 'निजी अवकाश' की
सुविधा भी नहीं दी जाती

सबको उसकी आवश्यकता है....
यही उसके लिए संतोषप्रद हो जाता है
जिसे वह प्रेम समझती है
वह नहीं जानती
कि,
उनके इस आवश्यकताजनित 'प्रेम' का
वास्तविक प्रेम से दूर दूर तक संबंध नहीं है
स्त्री को किसीसे प्रेम नहीं करना चाहिए....
क्योंकि
केवल और केवल उसके लिए
प्रेम की परिभाषा
'गुलामी' है...!!!!!

मेघा आचार्य

तुलिका

CREATION

सृजन

Merlin
Mumbai

कैमरा

CREATION

सृजन

Abhimanyu Singh
Madhya Pradesh

An Interview with Mr Nicolas Boin Pincipato

बात-चीत

Interviewee

Mr. Nicolas Boin Principato

Professor for Hindi
INALCO- Paris 3
France

Email :
nicolasboinprincipato@yahoo.com
Tel: +33 668251573

Interviewer :

Miss Latika Chawda

Ph.D. Research Scholar
Department of Translation Studies
MGAHV, Wardha
Maharashtra, INDIA
BHARAT

Email:
latikac1986@gmail.com
Tel: +91 7620613859
+91 8624854728

Namaste Nicolas *ji, would you please introduce yourself to our readers*!

A. S. : Well, I'm twenty four years old. I was born in France and I'm mixed blood. My mum is 100% Italian and my father has different origins. He is Polish, Ukrainian and French. So those are my roots. People in general are thinking that I'm French because I was born in France. They are not wrong but they're not right either. I mean that it's not because you were born in a country that you feel necessarily close to that culture, I have the French citizenship, right, but is that enough to say that I'm French?

Well, it depends of what you mean when you say I'm… I don't like boundaries...

Anyway, I like every kind of Art in which Soul is involve. In my opinion, Art has a wide sense, it includes music, poetry, cinema, painting, etc. but also way of living, philosophy, believes in some ways belong to Art. It's something you want to achieve, to realize in a perfect manner.. Yoga is an Art too.

Before starting learning Hindi, I was passionate about how you can arrange music and images together to make short clips or movies. So I've decided to do a Higher Technical Degree, it took me two years (2010-2012). At that time I only knew few things about Indian culture.

I've started learning Hindi four years ago (2013) in INALCO University in Paris. At that moment, I was completely ignorant about Hindi language and I even hadn't seen any Bollywood movie at all.

How many languages do you know and teach?

A. S. : I know some ! As I said I've several roots. So in the daily life I speak French but I can also speak English. I've a good understanding of Italian too but the thing is that I spent a lot of time in a region of Italy where they're not speaking Italian but *Napolitan*, a dialect spoken only in Naples. So I can understand both languages, Italian and *Napolitan*, even if the dialect is completely different from Italian.

Moreover, I'm learning Hindi since more than 3 years now, I've a good understanding but it's not yet always easy to express myself because of a lack of practice. I can also understand Spanish because I learned it during my years in College. But still, I'm not completely comfortable for speaking I've only a good understanding too. That's all for the spoken languages. Furthermore, I studied

Sanskrit during two years, a little bit of Pali and also Guarani a language spoken by aboriginals in the southern U.S.

Where have you studied/did your Masters?

A. S. : Mainly in France, INALCO University. I came to Wardha for one semester to seek a deepen knowledge of the Hindi literature and of course to improve my level of speaking too.

Tell us more about your deep interests in Dhyana Yoga, Indian Philosophy, Indian Music, Hindi literature and Sanskrit Theatre, Indian Cinema etc. as I see you practice these in your daily life and have performed in these as well?

A. S. : Actually, Yoga changed my life. I'm not talking about that Yoga American are mostly practicing with only *Asana*. I'm talking about *Sampurn Yoga* which is completely different. As you maybe know it's a real way of living, a philosophy.

I'm practicing Yoga for 5 years now. I'm calling it *Dhyana Yoga* but in fact that practice has no name, it's a mix of different practices in which my Guru in France is the heir. He is Indian and was born in Varanasi, he came in France more than 25 years ago.

The Yoga he taught me consists mainly in practicing *Pranayama* and Meditation, we also do some *Asana* but it's the most important according to him. So when I started Yoga, of course, I've been in touch with Sanskrit words, Indian concepts. So my interest started from that. After, the rest just followed: Indian classical music because of its meditative melodies, Hindi literature because of its deep cultural rooting, etc.

How did you develop your interest in Hindi studies? And how do you see the link between French and Hindi as language?

A. S. : This is connected to what I just said before. In fact, when I started to feel the first effect of Meditation, I thought how powerful was, and still is, the Indian culture, and how much important was for me to carry on and to go into it further.

When I started to practice Yoga I was finishing my Degree in the Audiovisual field and I thought that I could make documentaries about the Indian culture because in the West most of the people really don't know anything about India, only the main cliché about cast system, women, etc. In general, they have only a negative opinion. But according to me India has a lot of things to teach us (Westerners). So I would like to try to change mindsets in France… Hard task I know…

About the link between French and Hindi, the only thing I can say is that both languages belong to the same linguistic family, the Indo-Aryan. So they are linked but not very close in their structure.

You have passion for Hindi and you also knew other universities imparting education in Hindi but you chose MGAHV for the same, what is your opinion regarding Hindi as a language?

A. S. : Not easy to answer. First, I'm not Indian so I'm not directly concerned by that question. But it is true that, as a Hindi learner, I've thought about it and I have my own opinion on it. To be honest, Hindi is an incredible language because of its several roots from Arabic, Persian and Sanskrit and Pali.

But "modern Hindi", as I learnt it in my school, is a pure invention. I mean, that Hindi taught in schools is not "natural". It's a language created by Westerners and developed with the help of Indians in 1800 by the Fort William College. So I wonder what was the impact of that creation on the Indian culture? I don't have the answer but it's an interesting question according to me.

Anyway, the other thing I would like to point out is that in India you have so many languages from the South to the North. It is not easy to decide which language is more legitimate than another. Because each is tie to a community and they have to be equal before the law. So why should Hindi be the language of India? Who can decide?

We know that for the unity of a country it's important to share one language and as long as the people does not the country will never be well balanced. From what I was able to understand when politicians and scholars said that they wanted Hindi as the National language of India, I guess that they were not planning to impose Hindi as French for example in France was imposed as the only spoken language. They were still giving credit to regional languages and didn't speak about erasing them. So for the unity of India yes I agree, Hindi is a solution and I don't think there are others. Because English is not the solution, it's simply not an Indian language so it can't be your National language. The only thing is that the other languages must be respected, I don't want Hindi as the only language of India, and I think that Indians.

As you say you are passionate about Indian culture, what difficulties do you face while translating any text/ poetry or any genre in Indian context to European context?

A. S. : According to me, a language is the expression of a way of living and a way of thinking. How can you translate anything if you don't know the philosophy of the culture you're working on? I mean translation is not only to replace a word by another one, it's a deeper exercise than it seems to be. First, I think that translators have to live a part of their life in the country in which the language they are working on is spoken. You must become imbued with that culture and only after you can start translating. Reading too is not enought, you must live, breath the same air…go throught real experiences of that culture.

As per your knowledge, what steps are being taken in France regarding technical advancement or Machine Translation from French to Hindi and vice versa?

A. S. : I'm not really aware about it. The only thing I know is that someone is working on an online Shabdkosh - French-Hindi - its name is *Boltidictionnary*.

What do you feel is the status of Hindi/Bharat in the other languages (countries) you know and speak in?

A. S. : I can't really answer properly to that question because I'm not living in these countries but I know that in general the same views are shared in western countries. Maybe less in America than Europe because they are more open-minded than us.

Is 'Indology' the subject pursued at University level in France?

A. S. : Not really. My department at INALCO is "*South East Asia Himalaya*" which included different languages and subjects of that region. Mainly, the classes are focusing on economic development and political history of "modern" India. We don't really study its old history and what is linked to Sanskrit.. I learnt it in

another University in Paris (Paris 3 Sorbonne) where I studied Sanskrit.

What is the scope for Hindi translators in France?

A. S. : I'm really enable to answer. The main problem in France is that the Hindi literature is not very known and broadcasted. Some books are appearing from here and there but the most famous and read authors are Bengali like Tagore, Arundhati Roy, etc. So the scope is very limited and I think in the future we should try to increase the presence of the Hindi literature in France.

How do you see 'Translation' on global level?

A. S. : It's a very good question and I have another one in return to ask you :

Is it possible to translate everything? I mean yes of course we can translate basic tasks and behaviors, those are commons and shared by all human beings. But I think not everything can be translated. For example, the first time I feel stuck for a translation was while I was reading Kabir. In France, someone has translated the poetry of Kabir, the meaning was right but… what about the original rhythm? Lost… The musicality of the original words ? Gone… The essence of the poem just disappears even if the meaning was right, so is this a good translation ? Is the translating experience only about the meaning of words? I don't think so. To conclude, I would like to quote a very interesting point of view I recently read in a book:

"Poetry is a sequence of meaningful silences strung together with words. And it is perhaps here, that one strikes the hard core of the problem of translation: the issue is not whether there can be a true correspondence of words but whether there can be a true redaction of silence - whether an Indian silence can be adequately rendered in terms of an Anglo-Saxon one [...] " - Sachchidananda H. Vatsyayan, Modern Hindi Poetry.

"What message would you like to give to Indians and foreign nationals who love India BHARAT ?"

Only one thing : to not forget your origins, to know it and convey it to the next generations coming, because we don't want a homogeneous world leaded by capitalism. Your traditions have some good aspects so your duty is to embody it to sustain it for more centuries…

*Thank You for giving the interview for "**Transframe**".* (www.transframe.in)

मराठी के सुप्रसिद्ध कवि मंगेश पाड़गावकर की कविता का अनुवाद

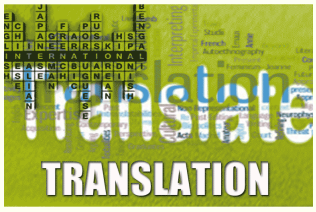

अनूदित

इस अंक में प्रस्तुत है - मराठी के सुप्रसिद्ध कवि मंगेश पाड़गावकर की मराठी कविता का हिंदी अनुवाद

शिल्पा

पीएचडी शोधार्थी

बताइए कैसे जीना चाहते हैं?

कराहते कराहते या गीत गुनगुनाते

आप ही तय कीजिए!

भरी आखों से कोई आपको याद करता तो है ना!

दो निवाले थाली में तुम्हारे कोई परोसता तो हैं ना!

बद्दूआ देते बैठे रहना है या दुवा देकर मुस्कुराना है

आप ही तय कीजिए!

स्याह घने अंधेरे में

जब कुछ भी दिखाई नहीं देता

तब आपके लिए कोई

दीपक लिए खड़ा होता है

तब अंधेरे में कुढ़ना है या प्रकाश में उड़ना है

आप ही तय कीजिए

पांव में काटा चुभता है

यह तो वास्तविकता है

और फूल खिलते है

क्या यह वास्तव नहीं है?

काटे की तरह चुभना है या फूल की तरह खिलना है

आप ही तय कीजिए

प्याला आधा खाली है

ऐसा कहा जा सकता है

प्याला आधा भरा है

ऐसा भी कहा जा सकता है

आधा खाली कहना है या आधा भरा

आप ही तय कीजिए

बताइए कैसे जीना है

कराहते कराहते या गीत गुनगुनाते

आप ही तय कीजिए

An Introduction To Spanish Grammar

भाषा

When learning a new language, it is always useful to be familiar with its main grammatical units. This constitutes the first necessary step in order to understand and create meaningful speech.

Here are the main grammatical elements in Spanish and some useful information about them:

Nouns:

A noun is a word which is mostly used to refer to a person or thing. All nouns in Spanish have a gender, meaning that they are either masculine or feminine. For example, nio (boy) is masculine and nia (girl) is feminine. The best way to identify gender is undoubtedly experience, although here are some general guidelines which may be useful at the beginning: usually nouns ending in o are masculine and nouns ending in a are feminine. Of course there are always exceptions.

This can obviously be complicated for learners at the beginning, but once you get used to it, you will have no problem communicating effectively.

For example, mano (hand) and radio (radio) are feminine. On the other hand, words of Greek origin ending in ma, such as dilema (dilemma) or problema (problem) are masculine. When you are learning new vocabulary, it is recommendable that you learn a noun together with its corresponding article. That will help you to remember their gender. For example la nia, la mano or el problema and el nio.

Adjectives:

Adjectives are used to qualify a particular noun, to say something about it. It is important to remember that in Spanish they are usually placed after the noun. Since adjectives are always related to a noun, they have to agree with them in gender and number.

TRANSFRAME TEAM

This means that if you want to say something about the noun nio, which is masculine and singular, the adjective that you use will also have to be masculine and singular. Thus, you can say nio alto (tall boy), nio pequeo (small boy), etc. If, on the other hand, if you were talking about a girl, you would have to say nia alta and nia pequea.

Pronouns:

Pronouns substitute for nouns. For example, you can say la nia est aqu (the girl is here) or ella est aqu (she is here). In this case ella is substituting for la nia.

The subject pronouns in Spanish are yo (I), t/usted/vos (singular you), l (he), ella (she), nosotros (we), vosotros/ustedes (plural you), ellos (they).

The singular and plural you are used differently depending on the dialect of Spanish that you are using. It is important to remember that subject pronouns are frequently omitted in Spanish, since the ending of the verb already indicates this. Thus, native spears would say estoy aqu (Im here) rather than yo estoy aqu.

Verbs:

Verbs indicate actions. Usually when you enumerate a verb, you use what is called the infinitive, for example hablar (to speak). In Spanish there are three different types of verbs, depending of how their infinitive ends. These different categories are called conjugations.

Thus, there are verbs ending in ar, such as hablar, in -er comer (to eat) and in ir dormir (to sleep). As mentioned before, verbs in Spanish have different endings depending on who the subject of the action is. These endings will vary from one conjugation to the other. For example, with the verb hablar, the singular you is (t) hablas, whereas with comer it is (t) comes. This can obviously be complicated for learners at the beginning, but once you get used to it, you will have no problem communicating effectively.

हिंदी में अव्यय शब्दों के अर्थ प्रयोग की स्थिति

भाषा

हिंदी भाषा मेँ अव्यय शब्दों का प्रयोग संदर्भानुसार किया जाना आवश्यक होता है ताकि वांछित अर्थ कि प्राप्ति हो सके। भाषाई संप्रेषण की प्रक्रिया में अव्यय शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शब्द एवं वाक्य स्तर पर संरचनात्मक अथवा प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से भाषा को सुव्यवस्थित बनाने हेतु अव्यय शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

सत्येन्द्र कुमार

Satyendra.of.kumar@gmail.com

जापानी भाषा मे एडवांस्ड डिप्लोमा

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

भाषाई संप्रेषण की प्रक्रिया में अव्यय शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शब्द एवं वाक्य स्तर पर संरचनात्मक अथवा प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से भाषा को सुव्यवस्थित बनाने हेतु अव्यय शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इन शब्दों को समुच्चयबोधक अव्यय भी कहा जाता है। जिसका प्रयोग दो या दो से अधिक शब्दों/पदों,उपवाक्यों,वाक्यों को जोड़ने या अलग करने के लिए किया जाता है। इन शब्दों को संक्षेप में योजक या संयोजक भी कहा जाता है।

वाक्यगत अर्थ की दृष्टि से अव्यय शब्द दो प्रकार होते हैं –जिसे निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

1. समानाधिकारण अव्यय शब्द- इसके तहत वाक्य के समान स्तरीय अलग-अलग घटकों को जोड़ते या अलग करते हैं। कभी- कभी यह योजक शब्द मुख्य या स्वतंत्र उपवाक्य को जोड़कर संयुक्त वाक्य का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए तुम्हारा भाई बहुत लंबा **और** सुंदर है। कल लगातार पानी बरसाना तो बंद हो गया था,**लेकिन** ठंढी हवा चलती रही थी **और** कभी-कभी छीटे पड़ जाते थे। राधा खड़ी थी **और** अलका बैठी थी।

समानाधिकारण समुच्चयबोधक शब्दो को पुन: चार प्रकारों मे बांटा जा सकता है-

योजक/संयोजक- दो शब्दों या वाक्यांशों अथवा उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं जैसे- गंगा **और** यमुना का मैदानी भाग बहुत उपजाऊ है,वाक्य में 'और' शब्द संयोजक की भूमिका में है।लखनऊ बहुत सुंदर शहर है **तथा** बहुत घनी आवादीवाला है,वाक्य में 'तथा' वाक्य संयोजक भूमिका मेँ है। **और** का योजकत्व कई संदर्भों मेँ प्रयुक्त होता है- **कार्य-करण संबंध मेँ-** जैसे: धन आया **और** खुशियाँ आई। **कार्य का घटना क्रम-** छात्र **और** शिक्षक एक-एक कर चले गए। **समकालीन घटना क्रम मेँ-**आतंकवादी ने बम फोडा **और** राज नेता दिवाली माना रहे थे।**विपरीत घटना क्रम मेँ-** कितनी देर से आवाज लगा रहा हूँ **और** तुम हो कि सुनते नहीं।

विभाजक/विकल्पबोधक- विभाजन और विकल्प प्रकट करने वाले शब्द या यू कहें तो इसके तहत ग्रहण या त्याग का बोध कराने वाले वाले योजको को रखा जाता है।जैसे- चाहे,अन्यथा,अलावा,क्या,कि,न कि,या आदि। उदाहरण के लिए- तुम जा रहे हो **या** यही बैठे रहोगे।

विरोधसूचक- दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त संयोजक शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं।जैसे-किन्तु,परंतु,लेकिन,बल्कि,मगर।उदाहरण के लिए वह गायक बनाना चाहता था **किन्तु** ऐसा हो न सका। आज तो बाहर ही नहीं **बल्कि** घर मे भी गर्मी लग रही है।

परिणामसूचक- पहले वाक्य कि क्रिया या कार्य की सूचना देने वाला संयोजक इसके तहत शामिल किए जाते हैं। जैसे – अत:,अतएव,फलस्वरूप,अन्यथा।उढहरण के लिए बर्फ गिरे हैं **अत:**ठंढ तो होगी ही।

2. व्यधिकरण अव्यय **शब्द-** किसी वाक्य के प्रधान या आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द को इस श्रेणी मे सखा जाता है। इन्हे चार प्रकारों में बाँटा जा सकता है-

1.कारणसूचक- इसके तहत दो उपवाक्यों को जोड़कर होने वाले कार्य का करण सपष्ट किया जाता है।जैसे- चूंकि,ताकि,क्योकि,इसलिए। **चूंकि** वह लंगड़ा है अतः वह दौड़ नहीं सकता। गहरे पानी मे मत जा **क्यूंकि** तू तैरना नहीं जानता है।

2.संकेतसूचक- वाक्य के क्रिया व्यापार को पूरा करने के बारे में संकेत या शर्त व्यक्त करने वाले योजकों को संकेतसूचक कहा जाता है।जैसे- हालांकि, अगर,यदि।उदाहरण के लिए- **अगर** हम पाँच मिनट भी लेट हो जाएँ तो बस छूट जाती है।**हालांकि** उसने जी जान एक कर दी थी।

3.**उद्देश्यसूचक**- इसके तहत वाक्यगत क्रिया व्यापार का उद्देश्य/मनोरथ का बोध कराने वाले शब्द आते हैं। जैसे-ताकि,जिससे कि।उदाहरण के लिए-वह चुप-चाप रहा **ताकि** झगड़ा न हो।जल्दी जाओ **जिससे कि** सही समय पर पहुँच सकोगे।

4.स्वरूपसूचक/व्याख्यासूचक- मुख्य उपवाक्य का अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं। यह प्राय: वाक्य के आरंभ में प्रयुक्त होते हैं।जैसे- यानि,मानो/जैसे कि। उदाहरण के लिए- ऐसा लग रहा था **मानो** उसने कई दिनों से खाना नहीं खाया हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी भाषा में अव्यय शब्दों का प्रयोग संदर्भानुसार किया जाना आवश्यक होता है ताकि वांछित अर्थ कि प्राप्ति हो सके।

Camera Tips for Enhanced Digital Photos

अभ्यास

Just bought a new camera ?? And very excited to start taking photos with your new gadget??

But Alas, why does the picture not look as good as you wanted to !! Fret no more, stay tuned below for 4 new tricks to taking more interesting and memorable photos.

This time in Practice column we are going know about some useful tricks for Entry level Dslr photography.

1 – Try out different camera exposure settings

By exploring the exposure settings of your camera, you could have pictures looking more brilliant with 0.5 to 2 stops underexposed in bright surroundings, and scenes appearing more clear with some overexposure. Just by simple tuning of the exposure level, you can create pictures which can bring out different moods from people viewing it. Thats why the quote "A Picture Says A Thousand Words" is very true indeed ! For newbies, try out bracketing (i.e: Take the same photos with different exposure levels) and take your favorite pick from them.

2 – Bring out some creative blur in photos

By introducing some well-planned blur in photos, you can bring across certain important features, while using the rest as good complement, providing an overall nice touch. This can be done in 2 basic types.

First type is depth-of-field blur. Varying the lens aperture between 0.4 to 1.4 can create a lovely, soft background blur which bring sharp focus to the subject in the foreground.

Second type is movement blur. Done by setting the camera exposure on shutter priority, and keep it slow so as to capture interesting streaks as the subject moves in front of the camera.

TRANSFRAME

3 – Create something out of nothing

What does it means? This exercise encourages you to take a step back and rethink how you can take wonderful pictures with things you already encountered on a daily basis. One approach is to create your shot around the common elements around you such as lines, space and patterns. This can mean anything from the roads to the bridges, the trees, the railings, etc.. You start to see more possibilities and room for creativity.

4 – Take Unique Photos

Try to avoid taking photos from already popular places where everyone else has taken before, it will not be fresh, and the excitement is also much diminished. Try out new extreme photography (for example: underwater photography), or it could be as easy as shooting through thick glasses for that extra 3D feel, or shooting reflections of objects in water or other reflective objects.

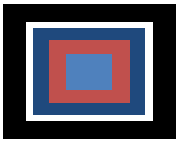

हिंदी का अतीत और वर्तमान

भाषा

‘मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ’ अमीर खुसरा ने पैतृक भाषा तुर्की और फारसी पर हिंदी को वरीयता प्रदान की है। अगर आप मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदवी में पूछो। खुसरो ने ‘हिंदवी’ शब्द का प्रयोग मात्र ‘हिंदी’ के लिए नहीं किया अपितु संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी किया है। ‘नुह सिपहर’ के तीसरे सिपहर में जिन बारह हिंदुस्तानी भाषाओं का उल्लेख किया है उन सबको ‘हिंदवी’ कहा है -

सिंदी1-ओ-लाहौरी2-ओ कश्मीर3-ओ-गर4

घुर समंदरी5 तिलंगी6-ओ-गुजर7

माबरी8-ओ-गोरी9-बंगाल10-ओ अवध11

दिल्ली12-ओ-पैरामनश अंदर हमा हद

ईं हमा हिंदवीस्त ज़ि ऐय्याम-ए-कुहन

आम्मा बारस्त बहर गूना सूख़न(1)

सिंदी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी, कन्नड़, तेलगु, गुजराती, तमिल, असमिया, बंगला, अवधी, दिल्ली और उसके आसपास जहाँ तक उसकी सीमा है इन सबके मिले-जुले रूप को हिंदवी नाम से जाना जाता है। हिंदी किसी एक भाषा का नाम न होकर एक भाषा-परंपरा का नाम है। इस भाषा-परंपरा के अंतर्गत खड़ी बोली, डिंगल, ब्रज, अवधी, हिंदी आदि की समस्त भाषा-उपभाषाओं का समावेश हो जाता है।(2) इस प्रकार अमीर ख़ुसरो की ‘हिंदवी’, पं. राजशेखर के सर्वभाषा सिद्धांत और लोक परंपरा के जन कवियों की षडभाषा विचार(3) की भाषा संस्कृति को अपने में समेटे हुए है। जो मात्र आज की हिंदी के लिए न आकर पूरे भारत की भाषाओं के लिए आया है। वर्तमान हिंदी का जो स्वरूप है, उसे किसी जन बोली या क्षेत्र विशेष की परिधि में बांधा नहीं जा सकता। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अमीर ख़ुसरो ने भाषित चेतना को राष्ट्रीय-सांस्कृतिक अस्मिता से जोड़कर हिंदी को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। भाषा काव्यों की प्रकृति अधिकांशतः लोकान्मुखी रही है। गुजरात के मनीषी संत महामति प्राणनाथ ने इसे ‘हिंदुस्तान’ कहा है-

सब को प्यारी अपनी, जौ है कुल की भाख।

अब कहूँ मैं भाषा किन की, या में भाषा तौ कै लाख।।

बोली जुदी सबन की और सब का जुदा चलन।

सब उरझे नाम नाम जुदे घर, पर मेरे तो कहे ना सबन।।

बिना हिसाबें बोलियाँ, मिने सकल जहान।

हिंदी विश्व-भाषा बने इसके लिए हिंदी को नेय बोध को वहन करने के लिए अपनी भाषिक क्षमता को विकसित करना होगा। शब्दों को व्यवहार में लाने के लिए लचीलापन लाना होगा। शब्दों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में उदार होना जरूरी है।

डॉ. चरणजीत सिंह सचदेव

सब को सुगम जान के, कहूँगी हिंदुस्तान।।(4)

तत्कालीन युग में बोले जाने वाली भाषा-संस्कृति को 'हिंदवी' अपने में समेटे हुए थी। वही भाषा-संस्कृति आधुनिककाल में गांधी जी के भाषा विषयक विचार में 'हिंदुस्तानी' बनी है। आज की भाषित चेतना में अमीर खुसरो की आत्माबोलती है जो भारत की साझी विरासत की प्रतीक है। यह भाषा आज भी भारत, अफगानिस्तान, मध्य एशिया और ईरान आदि देशों के मध्य एक मजबूत सांस्कृतिक सेतु का कार्य भी कर रही है। ''इश्क-ए-इलाही'' में मस्त रह कर हिंदुस्तान की गालियों में अपना घर ढूँढने वाले मौलाना रूमी और कबीरदास ने अपनी वाणी रचना का आधार लोकभाषा को बनाया, जिसे किसी ने 'खिचड़ी' कहा तो किसी ने सधुक्खड़ी। भाषा के संदर्भ में कबीर का लोक-बोध बहुत समृद्ध है। कबीर शब्द विवेकी हैं। विवेकशील व्यक्ति किसी भी आधार पर समाज के बंटवारे को स्वीकार नहीं करता है। भाषा का विचार और संस्कृति से गहरा नाता है। किसी का साधु हो जाना ही पर्याप्त नहीं है - साधु भया तौ क्या भया, बोलै नांहिं बिचार। हतै पराई आतमां, जीभ बांधि तरवारि।।(5) कबीर अपढ़ है तो क्या हुआ, जीवन के गहन अनुभव से संपन्न हैं। शास्त्रज्ञाता पंडित की अपेक्षा शब्द विवेकी, जो प्रत्येक शब्द को 'हिये तराजू तोल के' अभिव्यक्त करता है, को मानुष मानते हैं - 'मानुष सोई जानिये, जाहि विवेक विचार।(6) कबीर का भाषा सामर्थ्य अद्भुत है। कबीर ने संस्कृत को नकार कर जनभाषा को अपनाया। जनभाषा में अभिव्यक्ति की प्रयोगशीलता और स्वतंत्रता है जिसमें देशज आधुनिकता का पुट मिलता है। जड़ हो गए सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति कबीर के आक्रोश और आक्रामक तेवर में आधुनिकता का स्वर गूंज रहा है। वर्तमान संदर्भ में उसमें अमीर खुसरो की 'हिंदवी' की साझी विरासत की समस्त विशेषताएँ विद्यमान हैं। वस्तुतः हिंदी एक बहुभाषिक उपस्थिति है; जिसका आधार सामुदायिक है। हिंदी का राष्ट्रीय रूप है। सही अर्थों में हिंदी परंपरा है, 'कंसीडरेशंस ऑफ ऑल' है। यह 'एक' भाषा नहीं है, भाषाओं का समाहार है।

वर्तमान संदर्भ में निहित स्वार्थों की खातिर और वोट तंत्र की राजनीति ने हिंदी को कमजोर करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। राम विलास शर्मा ने उक्त संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के आशय को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''हिंदी प्रदेश की एकता का प्रश्न प्रादेशिक प्रश्न मात्र नहीं है, वह जातीय प्रश्न के अलावा राष्ट्रीय प्रश्न भी है। इस देश की विभिन्न जातीय भाषाओं को मिलाने वाली, उनके बोलने वालों के बीच संपर्क के काम आने वाली एक ही भाषा है- हिंदी। इस हिंदी को भीतर से विघटित कर दो, उसका जातीय विकास छिन्न-भिन्न कर दो, तो राष्ट्रीय एकता का माध्यम अपने आप नष्ट हो जाएगा। यह बात द्विवेदी जी ने बहुत साफ-साफ 1926 में देख ली थी।''(8) 'हिंदी पर फिर विवाद' शीर्षक से हिंदुस्तान में छपे संपादकीय में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के इस कथन में छुपी गहरी पीड़ा को समझना होगा कि संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण करना आसान है, लेकिन अपनी संसद में उतना नहीं।''... प्रधानमंत्री बनने के बाद कन्नड़भाषी एच.डी. देवगौड़ा ने भी हिंदी सीखने का प्रयास इस कारण किया था कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश का राजकाज सिर्फ अंग्रेजी के जरिए नहीं चलाया जा सकता है।''

बाजारवाद के पूर्ववर्ती और वर्तमान वैश्विक दौर में व्यापारिक पक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत में अंग्रेजी का पोषण किसी हद तक व्यापारिक परिदृश्य के कारण होता रहा है और आज भी हो रहा है। ''वे देश बड़े प्रच्छन्न रूप से इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि भारत से अंग्रेजी न हटे, क्योंकि अंग्रेजी हटने का अर्थ है करोड़ों का व्यापार बंद हो जाना, जिससे अपूरणीय आर्थिक हानि होगी। वे यह भी जानते हैं कि अंग्रेजी-भाषी देशों के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रति जिमना आग्रह और अनुराग भारत में है उतना किसी दूसरे देश में नहीं। इसलिए वे हर तरह से चाहते हैं कि भारत में अंग्रेजी बनी रहे, क्योंकि इसी में उनका लाभ है - लाभ साधारण नहीं, असाधारण।''(9) अंग्रेज के प्रति संविधान का लचीलापन भी जिम्मेवार है। संविधान के अनुच्छेद 343(1) और 343(2) में यह कहने के उपरांत की सन 1965 से संघ की राजभाषा हिंदी होगी, अनुच्छेद 343(3) में यह कह कर अनिश्चितता पैदा कर दी गई कि संसद द्वारा सन 1965 के बाद भी कुछ प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग का उपबंध कर सकती है।' आज तक जारी है। जिसने समय-समय पर अंग्रेजी को प्रोत्साहित किया है। उक्त संदर्भ में देवेन्द्र नाथ शर्मा के विचार अवलोकनीय हैं - ''सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के इतिहास में दो समय बहुत संकट के रहे हैं - एक तो जब इस देश पर इस्लाम का आक्रमण हुआ दूसरे

जब अंग्रेजों ने अपना शासन स्थापित किया। इस्लाम की विजय सैनिक शक्ति की विजय थी, किंतु अंग्रेजों की विजय बौद्धिक शक्ति की विजय थी। इसीलिए प्रायः सात सौ वर्षों में इस्लाम से भारतीय संस्कृति को जो क्षति नहीं पहुँची, वह डेढ़ सौ वर्षों के अंग्रेजी शासन में पहुँची।(10) सिनेमा, विज्ञापन, और तकनीक आदि में जहाँ-जहाँ हिंदी का प्रयोग हो रहा है वह हृदय से नहीं आर्थिक लाभ और व्यापारिक हितों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

भूमंडलीकरण के दौर में जब पूरा विश्व एक गाँव में बदल रहा हो और सूचना क्रांति ने दूरियों को पाट दिया हो तब हम विश्व की किसी भी नवीनतम खोज के प्रभाव से अछूते नहीं रह सकते हैं। नए आविष्कार, खोज और तकनीक अपने कथ्य के अनुरूप नए शब्दों को गढ़ते हैं। समाज और शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रचलन नए बोध को विकसित करता है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में उसे समझने की आवश्यकता है। हिंदी विश्व-भाषा बने इसके लिए हिंदी को नेय बोध को वहन करने के लिए अपनी भाषिक क्षमता को विकसित करना होगा। शब्दों को व्यवहार में लाने के लिए लचीलापन लाना होगा। शब्दों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में उदार होना जरूरी है। शुद्धतावादी दृष्टिकोण इसमें बाधक हो सकता है। समय और परिस्थितियों के अनुसार हमें ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र की प्रकृति के अनुरूप हिंदी के ढालना होगा। मात्र 'दिवस' मनाने से हिंदी उस मुकाम पर नहीं पहुँच सकेगी।

भारतेन्दु ने 18वीं शताब्दी में ही 'निज भाषा' प्रेम का मूल मंत्र हमें दिया था। 'राजभाषा' के रूप में हिंदी की प्रतिष्ठा का विचार भी उन्हीं की देन है - 'प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि जन्त। राज-काज दरबार में, फैलाहवु यह रत्न। निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सबको मूल।'(11) श्रीधर पाठक ने 'एक हिंदी एक हिंद' का सपना देखा था। 'हिंदी का आर्तनाद' में उनकी पीड़ा अवलोकनीय है - 'सुनो कोउ हिंदी हू की टेर'। पाठक जी ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी भाषा को बनाने के ही पक्ष में थे। उक्त संदर्भ में गांधी जी का मत भी उल्लेखनीय और अवलोकनीय है - 'मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूंगा। जिसको गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिंदी भाषा का दर्जा बढ़ेगा।'' 15 अगस्त 1947 को बी.बी.सी. लंदन को दिया गया संदेश हिंदी की महत्ता का उद्घोष करता है-

''अंग्रेजी मोह से बड़ी मूर्खता कोई नहीं, दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।''

मोहनदास करमचंद गांधी

महात्मा गांधी भारतीय भाषाओं के व्यवहार जोरदार पक्षधर थे। गांधी जी के मातृभाषा प्रेम पर महावीर प्रसाद द्विवेदी की टिप्पणी उल्लेखनीय है, ''गांधी जी मातृभाषा के कितने प्रेमी और हिंदी प्रचार के कितने पक्षपाती हैं, यह बात उनके लेखों और वक्तृताओं से अच्छी तरह प्रकट है। इस बात को वे देशोद्धार और देशोन्नति का प्रधान साधन समझते हैं। यही राय अन्य अनेक देश भक्तों की है।... गांधी जी के जितने काम होते हैं, उनके गम्भीर विचारों के निष्कर्ष के आधार पर होते हैं। बिना खूब गहरा विचार किए, बिना दूर तक सोचे, बिना परिणाम पर अच्छी तरह ध्यान दिए, वे न कोई राय ही क़ायम करते हैं और न कोई काम ही करते हैं। इसी से उन्हें अपने प्रयत्नों और उद्योगों में कामयाबी होती है। वे बड़े विवेकशील हैं।''(12) हिंदी का वर्तमान बेहतर तभी हो सकता है जब हम भावात्मक दृष्टि से उसी प्रकार एकजुट हों जैसे स्वाधीनता-प्राप्ति के पूर्व थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोपीचंद नारंग, अमीर खुसरो का हिंदवी काव्य, पृ. 24.
2. मलिक मोहम्मद (संपा.), अमीर खुसरो भावात्मक एकता के मसीहा, पृ. 86.

(क) 'षटभाषा पुरानं न कुरानं कथितं मया' संक्षिप्त पृथ्वीराज रसो, आदिपर्व, श्लोक 25, पृ. 20.

(ख) 'षट भाषा स्वर सप्त ले, पिंड ब्रह्मांड व्योरे किये।' रज्जब वाणी, पृ. 451.

(ग) 'ब्रज मागधी मिलै अमर, नाग जमन आखनि।

3 सहज पारसीहू मिलै, खट विधि कवित बखानि।।

4 - भिखारीदास, काव्य निर्णय, दोहा 15, पृ. 191.

(घ) 'कई भाषाओं की शब्दावली के योग से जो भाष-प्रयोग का समन्वित रूप होता था, उसी को षड्भाषा नाम दिया गया है। यहाँ 'षट्' का मतलब छह की संख्या विशेष नहीं है। यह संख्या तो अधिक भी हो सकती है और कम भी। रमेशचंद्र मिश्र, संत साहित्य और समाज, पृ. 522.

5 . महामति प्राणनाथ, तारतम बानी कुलजम सनध, 13-15.

6. कबीर ग्रंथावली (संपा. पारस नाथ तिवारी), सा. 15, पृ. 185.

7. संत बाणी संग्रह-1, विवेक.

8. रमविलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरा, पृ. 236.

9. देवेन्द्रनाथ शर्मा, राष्ट्रभाषा हिंदी: समस्याएँ और समाधान, पृ. 161.

10. वही, पृ. 163.

11. भारतेन्दु ग्रंथावली, पृ.

12. रामविलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, पृ. 191.

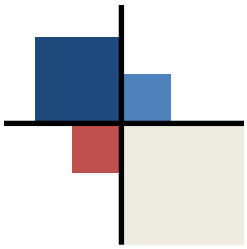

लोहिया की भाषा विकास की अवधारणा

शोध

देश में तो पहले से ही अलग अलग मुद्दों को लेकर समाज में असमानताए व्याप्त हैं, यह विदेशी भाषा उस असमानता को और अधिक बढ़ाने का काम कर रही है8। लोहिया इस बात से अच्छे से वाकिफ थे कि इस देश के विकास को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब तक कि अधिकतम लोग अपनी निजी भाषा का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

भारती देवी
पी. एच. डी.शोधार्थी
विकास एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

सार

लोहिया भाषा को विकास का एक प्रमुख अंग मानते थे। उनके अनुसार भाषा भी एक ऐसा माध्यम है और रहा है जिसके आधार पर शोषण हुआ जिसको उपनिवेशवाद में हमें स्पष्ट देखने को मिलता है किस तरह से अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा के द्वारा दूसरे देशों मुख्य रूप से औपनिवेशिक देशों को हीन और पिछड़ा दिखा कर लंबे समय तक शोषण करते रहे और उन देशों को विकास के मानदंड से कोसों दूर धकेल दिया। ठीक वैसा ही काम भारतीय समाज के संदर्भ में भी लोहिया बात करते हुए कहते हैं की उच्च वर्ग और सामंती वर्ग भी ने किया। इस असामनता और विकास की रुकावट से निपटने के लिए उन्होंने देश में देशी भाषा को पूर्ण रूप से लागू करने की बात की जो आम जन के द्वारा प्रयोग में रही है। उनका मानना था कि यदि हम कोई भी विचार लोगों को उनकी भाषा में प्रस्तुत करेंगे तो उन्हें समझने में अधिक सहूलियत होगी और विकास को आसान बनाना सम्भव हो पाएगा।

"अपने राजनितिक एवं सामाजिक जीवन के दौरान स्पष्ट रूप से यह अनुभव किया कि एक तरफ सामंती भाषा, सामंती भूषा, सामंती खान-पान और सामंती भवन है और दूसरी तरफ करोडों लोगों की लोकभाषा, लोकभूषा, और लोक भवन रहे है"1।

- रामनोहर लोहिया

प्रस्तावना

भारत में भाषा पर वैसे तो अनेक लोगों ने अपनी अलग-अलग विचार प्रकट लेकिन जैसे कि भारत में आम तौर पर देखा जाए तो भाषा पर विचार प्रस्तुत करने सबसे पहले राजनेता गांधीजी और फिर लोहिया का नाम प्रमुखता से आता है। यह बात स्पष्ट रही है कि भारत कि जन भाषा कभी भी शासन और शिक्षा की भाषा नहीं बन पाई। आज़ादी के बाद भी हम अपनी भाषा को पूरी तरह से अपनाने में असमर्थ हैं जो कि एक कटु सत्य है। आज भी देश की भाषाओं का अस्तित्व अनुवाद पर टिका है।

प्रमुख संदर्भ

लोहिया मानते हैं कि शासन करने वाले के लिए भाषा एक हथियार की तरह होती है जिसके द्वारा शासक वर्ग शोषण करके आगे बढ़ता है और संपूर्ण समाज को अविकसित की श्रेणी में खड़ा कर देता है। लोहिया यह भी कहते हैं कि शासक वर्ग कभी नहीं चाहता है कि कोई भी काम आम जन की भाषा में किया जाए। क्योंकि आम जन का विकास शासक और शोषण करने वाले वर्ग के लिए खतरा बन सकता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कि गाँव में झाड़-फूंक करने वाले की भाषा यदि आम जन को समझ आ जाए तो उसका धंधा बंद हो जाएगा और ओझा और भूत दोनों ही ख़त्म हो जाएंगे। ठीक इसी तरह हमारे राजनेता, डाक्टर, वकील अंग्रेजी भाषा के माध्यम से करते रहे है2। लोहिया कहते हैं कि लोकभाषा के बिना लोकराज असंभव है3। हिंदी भाषा की वकालत करते हुए गांधीजी ने यहाँ तक कहा कि अगर इतना ही मेरे हाथ में होता तो विदेशी माध्यम में दी जाने वाली शिक्षा बंद कर दूँगा4।

लोहिया को अपनी भाषा को चुनने का यह अर्थ बिलकुल भी न था कि उन्हें अन्य भाषाए नहीं आती थीं। उन्होंने अपनी पी-एच.डी.जर्मन भाषा में लिखी थी और फ्रेंच, संस्कृत और बंगला का

अच्छा ज्ञान था। बंगला तो वे मातृभाषा की तरह बोलते थे5। इस आशय से देखें तो पता चलता है कि लोहिया बहुभाषी भी थे और अन्य भाषाओं का सम्मान भी करते थे। वे अंग्रेजी भाषा के बारे में कहते हैं कि इसे ऐच्छिक होना चाहिए। पुस्तकालयों से इसे हटाने का सवाल ही नहीं उठता6। लोहिया यह किसी भाषा के विरोध पर नहीं, बल्कि अपनी भाषा को प्रमुखता देने पर बल देते हैं जिसे कि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि देश के अधिकतम लोग आज भी हिंदी भाषा या अपनी भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि यदि विकास को सब तक पहुँचाना है तो अपनी भाषा को महत्त्व देना ही पड़ेगा नहीं तो अगले हजारों हजार साल विकासशील की श्रेणी में ही रहेंगे।

वे भाषा को कैसे वैकल्पिक विकास के सतह जोड़ते हैं इसे समझना अधिक आवश्यक इसलिए हो जाता है कि एक विद्यार्थी जिसने अपनी पढाई हिंदी या तमिल में की है लेकिन केंद्र सरकार की नीति में अंग्रेजी प्रश्न पत्र को समझने में असमर्थ है या फिर अंग्रेजी के प्रश्न पत्र को हल करने में अक्षम है तो उसके शेष प्रश्न पत्र जांचे ही नहीं जाएंगे और उसका अपनी भाषा में संचित ज्ञान कूड़े में फेक दिया जाएगा7। इस तरह से अपनी भाषा में संचित ज्ञान उद्देश्यहीन हो जाता है। शायद इसी वजह से लोहिया आम जन की भाषा को सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में लागू करने को मान्यता प्रदान करते हैं। लोहिया ने इस तरह से हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के माध्यम से एकरूपता लाने का भी काम किया और अलग-अलग प्रांतों में बोली जाने वाली भारतीय भाषाएं किस तरह से एक दूसरे के निकट हैं इसके बारे में भी सूक्ष्म विश्लेषण किया। इस तरह से उनका अथक प्रयास था कि किसी भी तरह से देशी भाषा को शासन से और देश के हर मसले से जोड़ा जाए। भाषा से देश के सभी मामलों का सीधा संबंध है। वे बताते हैं कि इस देश में तो पहले से ही अलग अलग मुद्दों को लेकर समाज में असमानताए व्याप्त हैं, यह विदेशी भाषा उस असमानता को और अधिक बढ़ाने का काम कर रही है8। लोहिया इस बात से अच्छे से वाकिफ थे कि इस देश के विकास को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब तक कि अधिकतम लोग अपनी निजी भाषा का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

लोहिया अंग्रेजी भाषा पर प्रहार करते हुए कहते हैं कि अच्छा होता यदि देश का प्रबुद्ध वर्ग अपनी भाषा को अपनाता और संस्कृति में विद्यमान बुराइयों को दूर करने कि कोशिश करता। हमारी भावनाएं जितनी ठीक से हम अपनी भाषा में व्यक्त कर सकते हैं और लोगों को सामूहिक रूप से जोड़कर चल सकते हैं शायद यह काम किसी दूसरे देश के माध्यम से उतना आसान न होगा जिसे कि हम सदियों से झेलते आए हैं और आज भी झेल रहे हैं। इस लिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि देश के विकास के लिए हमें विकल्प के तौर पर अपनी भाषा को बढावा दिया जाए। लोहिया कहते हैं कि यदि हमने अपनी भाषा को जीवन के हर पहलु में सच्चे मन से लागू किया होता तो आज देश का स्वरूप कुछ और होता। हमारे राजपुरुषों ने जिन्हें देश की बागडोर संभालने की जिम्मेदारी दी गई वे कसम तो हिंदी के लिए खाते रहे लेकिन वास्तविक जीवन में अंग्रेजी चलाते रहे9। इस तरह देश को चलाने वाले ही देश को पीछे ले जाने का काम करते रहे और जिस विकास कि हम कल्पना किए बैठे थे वह और भी पीछे चला गया। आज वो समय आ गया है कि फिर से हमें वैकल्पिक विकास के रूप में अपने देश में देशी भाषा को बढ़ाया जाए।

लोहिया बताते हैं कि हमारे यहाँ आम जन की भाषा कभी भी राजकाज और शिक्षा की भाषा नहीं बन पाई। इसका कारण वे बताते हैं कि वैदिक काल से लेकर भारत की गुलामी तक अधिकांश समय यह देखा गया कि आम जन की भूमिका सत्ता में न के बराबर रही इसलिए सत्ता की तरफ से जो भाषा कही गई उसी को लोगों ने अपना लिया। ऐसे में तो आम जन का विकास ठप्प हो गया और शासक वर्ग का विकास अधिक तेज हो गया। सांस्कृतिक पूँजी को बचाएं रखने एक सशक्त माध्यम भाषाई पूँजी है।

लोहिया कहते हैं कि जब तक शासन और सत्ता में आम जन की भागीदारी नहीं होगी तब तक वास्तविक लोकतंत्र संभव नहीं है। आम जन की भाषा को अपनाना किसी महान क्रांति से कम नहीं होगी जिसके कारण सामंत शाही का सारा ढांचा ढीला पड़ जाएगा। वे कहते हैं विकास के लिए बगैर आम जन की भाषा की बात किए आम जन की सरकार हो ही नहीं सकती है। लोहिया का कथन है कि भारत माँ की जीभ वापस करो। जिस देश की जनता ही बेजुबान हो वहाँ विकास का तो मतलब ही नहीं बनता। लोहिया कहते हैं बगैर अपनी भाषा के होने का अर्थ है कि बगैर पानी के तैरना सीखना10। लोहिया अपनी देशी भाषा का समर्थन क्यों करते हैं इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि अपनी भाषा केवल एक अपने को प्रस्तुत करने का साधन मात्र ही न हीं है, बल्कि यह हमारे अंदर एक मनोदशा और परिवेश का निर्माण करती है जिसकी वजह से हम अपनी संस्कृति से जुड़ पाते हैं। जो व्यक्ति अपनी भाषा से कट जाता है वह अपनी संस्कृति से भी धीरे-धीरे दूर हो जाता है और ऐसी हालत में तो केवल अवनति का

मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

लोहिया कहते हैं कि आमजन की असल औकात उसकी अपनी भाषा से होती है। और दूसरी तरफ वे कहते हैं कि आम जन ही देश की भाषा का रक्षक है। भले ही उसका विकास प्रभावित होता है कि वह शासक वर्ग की भाषा को नहीं अपना सकता है, लेकिन देश के सामूहिक विकास के लिए तो देशी भाषा को ही अपनाना पड़ेगा। यह भी देखा गया कि पेट का प्रश्न सीधे दिमाग से जुड़ा है, दूसरे शब्दों में भाषा का संबंध जितना दिमाग से है उतना ही पेट से भी। लोहिया कहते हैं कि अधिकतम लोग देश के मजदूर और श्रमिक वर्ग ही जिनकी भाषा देशी है। उनकी हालत ऐसी इसलिए है कि उन्हें शासक वर्ग की भाषा नहीं आती है और नेता तथा मजदूरों के मध्य संबंध नहीं होते हैं। उनकी तो जड़ ही नहीं जिन पर खड़े होकर मजदूर खुद नेता बन सके11।

लोहिया कहते हैं कि अंग्रेजी भाषा ने देश के पूरे सिस्टम को जकड़ रखा है। विकास का मार्ग तो आगे बढ़ ही नहीं सकता है, क्योंकि न्यायालय, संसद, विश्वविद्यालय, मीडिया हर जगह छाई हुई है। हिंदी केवल फ़रियाद करने वालों की भाषा बनकर रह गई। इसे संवैधानिक रूप तो दे दिया गया लेकिन वास्तविक शक्ति छीन ली गई। ऐसी हालत में देखे जबकि पूरे देश का कामकाज किसी विदेशी भाषा पर टिका हुआ है और आम जन किसी और भाषा पर तो ऐसे परिवेश में आमजन का विकास कैसे संभव हो सकता है। इसलिए अब समय आ गया है कि अपनी भाषा को अपनाया जाए और आम जन को सता और शक्ति दोनों से ही जोड़ा जा सके और संपूर्ण विकास कि प्रक्रिया को पूर्ण किया जा सके। लोहिया के भाषा के इस प्रकार के आंदोलन में मुझे एक ऐसे विकल्प की आशा दीख पड़ती है जो कि किसी भी रूप में दूसरे विकास के विकल्प का रास्ता दिखाता है।

पादटिप्पणियाँ

1. ओंकार शरद (सं.), *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2007. पृ. 167.
2. वही, पृ. 169.
3. वही, पृ. 144.
4. महात्मा गांधी, *मेरे सपनो का भारत*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, ग्यारहवा संस्करण, 2010, पृ. 119.
5. कलाओं की दुनिया में डॉ. लोहिया, प्रयाग शुक्ल, *तब और अब* , सामान्य जन सन्देश, (डॉ. राममनोहर विशेषांक), नागपुर, जुलाई 2011, पृ. 135.
6. ओंकार शरद (सं.), *लोहिया के विचार; राममनोहर लोहिया,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, छठवा संस्करण, 2008, पृ. 135.
7. गंगा सहाय मीना, लोहिया की भाषा नीती, जनपथ (भाषा विशेषांक), जनवरी –फरवरी, 2011, पृ. 65.
8. ओंकार शरद (सं.), *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2007. पृ. 156..
9. मस्तराम कपूर (सं.), राममनोहर रचनावली, भाग 8, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 381.
10. ओंकार शरद (सं.), *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2007. पृ. 157-159.
11. मस्तराम कपूर (सं.), *राममनोहर रचनावली, भाग* 8, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 415-416.

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शरद, ओंकार(सं.). *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*. इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन.
- गांधी, महात्मा(2010). *मेरे सपनो का भारत*. वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन.
- कलाओं की दुनिया में डॉ. लोहिया, प्रयाग शुक्ल, *तब और अब*, सामान्य जन सन्देश, (डॉ. राममनोहर विशेषांक), नागपुर, जुलाई 2011.
- शरद, ओंकार (सं.)(2008). *लोहिया के विचार; राममनोहर लोहिया*. इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन.
- मीना, गंगा सहाय(2011). लोहिया की भाषा नीती. जनवरी –फरवरी, 2011 : जनपथ (भाषा विशेषांक).
- शरद, ओंकार (सं.)(2007). *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*. इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन.
- मस्तराम कपूर (सं.)(2008). राममनोहर रचनावली भाग 8. दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- शरद, ओंकार (सं.)(2007). *भारतमाता धरतीमाता; रामनोहर लोहिया*. इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन.

www.transframe.in

ISSN 2455-0310